जय-तिथि-पत्रक

श्री वीर-निर्वाण संवत्
२५४२-२५४३
विक्रम संवत् २०७३

तेरापंथ संवत्
२५६-२५७
ईस्वी सन् २०१६-२०१७

सम्पादक : मंत्रीमुनि सुमेरमल

जैन विश्व भारती
लाडनूं - 341306 (राजस्थान)
दूरभाष : 01581-226025, 224671, 226080, फैक्स : 01581-227280
E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com, Visit us at : www.jvbharati.org

अहिंसा यात्रा

₹15

जैन विश्व भारती

मानवीय मूल्यों को समर्पित संस्था

प्रमुख गतिविधियां : एक नजर

शिक्षा :

* जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
* विमल विद्या विहार सीनियर सैकण्डरी स्कूल
* महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर
* महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर
* समण संस्कृति संकाय
* केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी

सेवा :

* सेवाभावी आयुर्वैदिक रसायनशाला
* श्रीमद् आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र, बीदासर
* स्व. माणकचन्द मनोहरी देवी दूगड़ आयुर्वेद चिकित्सालय, बीदासर
* विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा केन्द्र
* समणी केन्द्र व्यवस्था

साहित्य :

* प्रकाशन एवं वितरण
* आगम मंथन प्रतियोगिता
* इतिहास मंथन प्रतियोगिता

संस्कृति :

* तुलसी कला वीथी (आर्ट गैलेरी)

शोध :

* आगम सम्पादन
* हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपियों की सुरक्षा एवं संरक्षण

समन्वय :

* पुरस्कार एवं सम्मान
* विदेशों में प्रचार-प्रसार

साधना :

* प्रेक्षाध्यान
* प्रेक्षाध्यान पत्रिका

उक्त सभी गतिविधियों में संपूर्ण समाज की सहभागिता एवं सहयोग हेतु सादर निवेदन

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं-341306, जिला : नागौर (राज.) फोन : 01581-226080 / 224671

E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com, Visit us at : www.jvbharati.org

आशीर्वचन

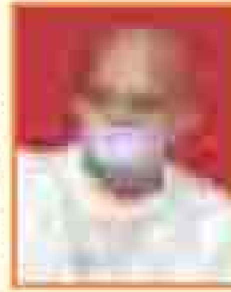

"आज यहां जैन विश्व भारती के कार्यकर्ता उपस्थित हुए हैं। उनकी मीटिंग भी रखी हुई है। जैन विश्व भारती एक **'कामधेनु'** है, जिसे गुरुदेव तुलसी ने **'कामधेनु'** कहा था। कितनी–कितनी गतिविधियां उसके द्वारा चल रही है और जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट (मान्य विश्वविद्यालय) भी उससे जुड़ा हुआ है। मैं तो यों सोचा करता हूं कि मां–बेटे का संबंध है। जैन विश्व भारती मां है तो जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट उसका सुपुत्र है। मां का काम है पुत्र का ध्यान रखना और पुत्र का काम है मां का ध्यान रखना। पहले मां–बाप बच्चों का ध्यान रखते हैं, पालते–पोसते हैं, पढ़ाते हैं, सिखाते हैं, बाद में बच्चों का फर्ज है मां–बाप का ध्यान रखना। इस प्रकार जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट का मां–बेटे का संबंध है।

जैन विद्या की सेवा जैन विश्व भारती के द्वारा हो रही है। साहित्य के क्षेत्र में बहुत बड़ा काम हो रहा है, आगमों का काम हो रहा है, सेवा का काम हो रहा है। हमारी समणियां जैन विश्व भारती में ही आवास ले रही हैं, हमारे कितने वृद्ध संत जैन विश्व भारती सेवाकेन्द्र में विराजित हैं। मुमुक्षु बहिनें, उपासिकाएं भी जैन विश्व भारती के परिसर में आवासित हैं। कितने–कितने आयाम, कितनी–कितनी गतिविधियां जैन विश्व भारती में है। अध्यक्ष धरमचंदजी लुंकड़ आदि जैसे कार्यकर्ता संस्था से जुड़े हुए हैं, वे जैन विश्व भारती को और अधिक आध्यात्मिक दृष्टि से आगे बढ़ाने का, शैक्षिक दृष्टि से आगे बढ़ाने का प्रयास करें, खूब अच्छा चिंतन–मनन करें और अच्छा चिंतन, अच्छा निर्णय और अच्छी क्रियान्विति हो। केवल चिन्तन हो जाये और निर्णय न हो तो पूरा काम नहीं होता। निर्णय भी हो जावे और क्रियान्विति नहीं हो तो भी पूरा काम नहीं होता। चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति तीनों में ज्यादा फासला नहीं होना चाहिए। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने फरमाया था कि चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति में अनअपेक्षित ज्यादा फासला नहीं होना चाहिए। चिंतन किया, फिर निर्णय करो, निर्णय किया फिर यथासमय क्रियान्विति करें।

जैन विश्व भारती एक गौरवशाली संस्था है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का मार्गदर्शन उस संस्था को मिला है और तेरापंथ समाज के पास इतनी बड़ी संस्था का आना एक प्रकार से समाज का मानो भाग्य है, तब इतनी बड़ी संस्था समाज के हाथ में आती है। यह संस्था अब तो युवावस्था में है। इस संस्था के द्वारा मानव जाति का कल्याण हो, इस संस्था के द्वारा जैन विद्या का खूब प्रचार–प्रसार हो। इस संस्था के द्वारा साहित्य के माध्यम से लोगों में ज्ञान वृद्धि हो और लौकिक सेवा का काम भी चल रहा है, जो समाज के लिए महत्वपूर्ण होता है। जैन विश्व भारती से तीन विद्यालय और कॉलेज जुड़े हुए हैं, उसके अन्तर्गत है तो स्कूलों के माध्यम से भी विद्यार्थियों को अच्छा नैतिक ज्ञान मिले, जीवन विज्ञान, जैन विद्या आदि का ज्ञान मिले। इस प्रकार जैन विश्व भारती, जिसे कामधेनु कहा जाये और जयकुंजर (विशालकाय हाथी) कहा जाये, कुछ भी कह दें, अपने आप में बहुत बड़ी संस्था है। लाडनूं जैसे सामान्य कस्बे में बड़ी संस्था है। लाडनूं सामान्य भले हो लेकिन गुरुदेव तुलसी की जन्मभूमि होने का गौरव उस शहर, उस नगर को प्राप्त है। गुरुदेवश्री तुलसी की जन्मभूमि के साथ जन्मभूमि पर जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती संस्थान है। ये संस्थान खूब अच्छा विकास करें। कितने–कितने विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के माध्यम से ज्ञान–दान प्राप्त हो रहा है और उसकी कुलपति भी हमारी शिष्या समणी चारित्रप्रज्ञाजी है। समणीजी भी खूब अच्छा काम करती रहे, इंस्टीट्यूट को आगे बढ़ाने का प्रयास करती रहे। आध्यात्मिक, शैक्षिक दृष्टि से विश्वविद्यालय भी विकास करे। जैन विश्व भारती की छत्रछाया उसको मिलती रहे, साया उसको मिलता रहे और दोनों संस्थाएं खूब अच्छा विकास करें।"

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

वर्ष आता है, चला जाता है।
यह कोई विशेष बात नहीं।
विशेष बात यही है कि हर वर्ष आदमी के
विकास का कालमान बने।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

अमरचंद धरमचंद लुंकड़

राणावास - चेन्नई

प्रकाशकीय

जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय द्वारा विगत 38 वर्षों से मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर जय-तिथि-पत्रक का प्रकाशन प्रतिवर्ष निरंतर किया जा रहा है। इसी क्रम में 152वें मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर संवत् 2073 का जय-तिथि-पत्रक सुधी पाठकों के हाथों में प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता है। जय-तिथि-पत्रक में ज्योतिषीय सूचनाओं, विशेष पर्वों, महत्त्वपूर्ण दिवसों व अनुष्ठानों के साथ-साथ संस्थाओं एवं विभिन्न संघीय गतिविधियों, कार्यक्रमों आदि से संबंधित उपयोगी सामग्री प्रकाशित की गई है।

परमाराध्य आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार तेरापंथ दर्शन मनीषी मंत्रीमुनि श्री सुमेरमलजी (लाडनूं) ने जय-तिथि-पत्रक संपादन के गुरुतर दायित्व का सम्यक् निर्वहन करते हुए दैनंदिन आवश्यकता की ज्योतिषीय सूचना-सामग्री प्रस्तुत करने की कृपा की है, हम मंत्री मुनिश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। मुनिश्री उदितकुमारजी के महनीय मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। श्री जीतमल नाहटा, कोलकाता का सामग्री संकलन कार्य में सहयोग प्राप्त हुआ, तदर्थ हार्दिक आभार।

जय-तिथि-पत्रक के प्रकाशन के लिए हमें अनेक महानुभावों का आर्थिक सौजन्य प्राप्त हुआ है। उनका उदार सहयोग-भाव संस्था की प्रवृत्तियों को गतिशील रखने में योगभूत बनता है। सभी अनुदानदाताओं के प्रति हम हार्दिक आभार ज्ञापित करते हैं। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में सहयोगी सभी महानुभावों के सहयोग हेतु आभार।

विश्वास है कि जय-तिथि-पत्रक की सामग्री सभी उपयोगकर्ताओं के लिए महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी तथा इसमें प्रस्तुत सामग्री से उपयोगकर्ता त्याग-प्रत्याख्यान के लिए प्रेरित होंगे।

धरमचंद लुंकड़
अध्यक्ष, जैन विश्व भारती

निलेश बैद
निदेशक, समण संस्कृति संकाय

अरविन्द गोठी
मंत्री, जैन विश्व भारती

01 जनवरी, 2016

अध्यक्ष की कलम से

जैन विश्व भारती तेरापंथ धर्मसंघ की एक महत्त्वपूर्ण संस्था है। संपूर्ण जैन समाज में यह एक गौरवशाली संस्था के रूप में प्रतिष्ठित है। इसके द्वारा अनेक संघीय एवं समाजोपयोगी गतिविधियां संचालित की जा रही है।

आचार्य तुलसी के सपनों की कामधेनु जैन विश्व भारती आज केवल एक संस्था के रूप में नहीं, अपितु मानव कल्याणकारी प्रवृत्तियों के केन्द्र, प्राच्य एवं जैन विद्या की संरक्षण स्थली एवं आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व-निर्माण स्थल के रूप में विविध दिशाओं में कार्य कर रही है। समाज-परिवर्तन एवं समाज-विकास की आचार्यश्री तुलसी की प्रबल उत्कंठा को जैन विश्व भारती ने यथार्थ में परिणित करने का प्रयास किया है। इस संस्था के माध्यम से आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और आचार्यश्री महाश्रमणजी का भविष्योन्मुखी एवं युगान्तरकारी चिंतन देश-विदेश तक पहुंचा है, जिस कारण से आज जैन विश्व भारती प्रस्तर खण्डों में नहीं, अपितु लोकमानस में प्रतिष्ठित है।

शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय–इस 'सप्तसकार' को केन्द्र में रखकर कार्य करने वाली यह संस्था वर्तमान में अपने अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के आशीर्वाद, समाज के सहयोग एवं सक्षम कार्यकर्ताओं के श्रम के फलस्वरूप अनेक मानव कल्याणकारी गतिविधियों का संचालन कर रही है। लगभग साढ़े चार दशक की यात्रा में जैन विश्व भारती ने अनेक पड़ावों को पार किया है। संस्था के सूत्रधारों के समक्ष संभावनाओं का असीम आकाश भी है और उसे प्राप्त करने का उत्साह, उमंग और जज्बा भी। उस असीम विकास के लिए परमपूज्य आचार्यप्रवर का पावन आशीर्वाद और चारित्रात्माओं का पावन पथदर्शन निरन्तर हमें प्राप्त है। सादर निवेदन है कि संपूर्ण समाज तन-मन-धन एवं चिंतन से जैन विश्व भारती की असीम विकास यात्रा के सहयात्री बनें।

नववर्ष की अशेष आध्यात्मिक मंगलकामनाएं

01 जनवरी 2016

धरमचंद लुंकड़
अध्यक्ष

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में किशनगंज (बिहार)

बिहार क्षेत्र का **किशनगंज** नगर अति प्राचीन एवं ऐतिहासिक नगर है। इस नगर में मशहूर खगड़ा इस्टेट भी इसी सुरजापुर परगना में शामिल था। खगड़ा नवाब मोहम्मद फकीरूद्दीन के समय एक कट्टर हिन्दू सन्यासी यहां आये। संन्यासी थके हुए थे और विश्राम करना चाहते थे लेकिन जगह का नाम आलमगंज, नदी का नाम रमजान और जमींदार का नाम फकीरूद्दीन सुनकर वे वापस लौटने लगे। नवाब को जब इसका पता चला तो उन्होंने अपने मैनेजर को संन्यासी को आदर सहित लाने के लिए भेजा किन्तु संन्यासी नहीं रूके। इससे नवाब को कष्ट हुआ और नवाब ने सर्वधर्म का परिचय देते हुए आलमगंज को कृष्णकुंज कर दिया यही कृष्णकुंज आगे चलकर तद्‌भव शब्द रूप में किशनगंज हो गया। इतिहासकारों के अनुसार इस क्षेत्र में कालान्तर में बहुत धर्मों का शासन हुआ पुराबशेषों एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों के माध्यम से यहां पाण्डवों की अज्ञातवास कथा भी प्रचलित है। किशनगंज जिले की देश के सीमावर्ती क्षेत्र में होने के नाते अपनी अलग पहचान है। कहा जाता है कि जब किशनगंज को आजादी के बाद भारत बंटवारे में बाहुल्यता के आधार पर पाकिस्तान के हिस्से में दिया जा रहा था तब किशनगंजवासियों के जन विरोध को देखते हुए इसे भारत को दिया गया। किशनगंज की धरती राष्ट्रीय प्रेम व धर्मनिरपेक्ष स्वभाव का परिचायक है। 'गंगा-जमुनी' संस्कृति, सामाजिक तथा साम्प्रदायिक सद्‌भाव किशनगंज का परिचय है। बिहार के पूर्वोतर सीमान्त पर स्थित सामाजिक दृष्टि से 'चिकेन नेक' एवं पूर्वोत्तर राज्यों में एकमात्र प्रवेश द्वार के रूप में चर्चित है। गरीबों का दार्जिलिंग एवं बिहार का चेरापूंजी माने जाने वाले किशनगंज में धर्म के संस्कार संस्कृति की अविरल धारा के रूप में प्रवाहित होते रहे हैं। यहां की 'सुरजापुरी बोली' एवं 'सुरजापुरी आम' मिठास के साथ-साथ सुरजापुरी लोगों के भोलेपन का एहसास भी खास है। यहां की उर्वरा मिट्टी में पाट, चाय एवं अनानास आदि उत्पादों ने किशनगंज को राष्ट्रीय स्तर पर एक विशेष पहचान दी है। किशनगंज जिले में अब्दुल कलाम कृषि महाविद्यालय की स्थापना हुई है एवं माता गुजरी मेमोरियल कॉलेज भी स्थापित है। शिक्षा क्षेत्र में इसकी जर्बदस्त पहचान और स्वर्णिम भविष्य है। जिले के विकास का चक्र गतिमान है।

किशनगंज के साधु-साध्वियां—किशनगंज की भूमि धर्मसंघ की दृष्टि से उर्वर धरा है, अब तक छह बहनें वैराग्य प्राप्त कर गुरु चरणों में दीक्षित हो चुकी हैं।

तेरापंथ और किशनगंज—धर्मसंघ की प्रभावना से किशनगंज लम्बे समय से पूर्वांचल का उर्वर का क्षेत्र रहा है। सन् 1965 में मुनिश्री धनराजजी के प्रथम चतुर्मास से धर्म जागृति की शुरूआत हुई, वहीं विभिन्न चारित्रात्माओं के समय-समय पर पदार्पण से किशनगंज अपनी

आध्यात्मिकता के कारण विख्यात है। मुनि धनराजजी के स्थानीय हवाखाना सरदारशहर के बैद परिवार के यहां चातुर्मास के पश्चात् सन् 1969 से लेकर सन् 1976 तक तीन चातुर्मास एवं तीन सिंघाड़ों के समय-समय पर हुए प्रवास में स्थानीय मानमलजी, दीपचन्दजी एवं वर्तमान में राजेन्द्रजी छाजेड़ का विशेष योगदान रहा, इनके आवास तुलसी निवास में सन् 1969 में साध्वीश्री कस्तूरांजी, मुनिश्री पूनमचन्दजी एवं सन् 1976 में साध्वी कमलश्रीजी टमकोर का चातुर्मास हुआ। साध्वीश्री मोहनांजी 'राजगढ़', साध्वीश्री गोराजी का प्रवास रहा। इनके ही आवास में 21 वर्ष तक स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल चला। ज्ञातव्य है कि महिला मण्डल की शुरूआत 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' से सम्मानित श्रीमती हुलासी देवी दुगड़ ने करवायी। इन्हीं के प्रयास से विराटनगर के स्व. श्री रामलालजी गोलछा ने तेरापंथ भवन निर्माण हेतु जमीन प्रदान की। स्व. श्री हंसराजजी बागरेचा ने उपासना कक्ष का निर्माण कराकर भवन बनाने हेतु पहल की। भवन निर्माण के बाद प्रथम चातुर्मास मुनिश्री कन्हैयालालजी, तत्पश्चात् साध्वीश्री यशोधराजी, साध्वीश्री मोहनकुमारीजी, साध्वीश्री सूरजकुमारीजी, साध्वीश्री सोमलताजी, साध्वीश्री कंचनप्रभाजी, साध्वीश्री प्रमीलाकुमारीजी के चातुर्मास हुए तथा वर्तमान में साध्वीश्री यशोमतिजी का चातुर्मास है। समय-समय पर किशनगंज में समणी केन्द्र भी बनता रहा है। विभिन्न चारित्रात्माओं के 12 चातुर्मास, 3 मर्यादा महोत्सव, 3 होली चौमासा एवं 2 अक्षय तृतीया महोत्सव, 3 मिलन समारोह एवं 5 महावीर जयन्ती समारोह हुए हैं।

किशनगंज का विकास–20वीं सदी के अन्त में श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री भीकमचन्द दफ्तरी के सुपुत्र एवं किशनगंज मर्यादा महोत्सव समिति के संयोजक श्री राजकरण दफ्तरी ने किशनगंज में चाय की खेती का आगाज कर किशनगंज को बिहार की चायनगरी के रूप में विख्यात किया है। श्री बी. प्रधान तत्कालीन जिला पदाधिकारी, किशनगंज ने कहा कि जिले में चाय की खेती ने भारत में चाय के मानचित्र पर स्थान बना लेने का गौरव प्राप्त किया है, जिसका सारा श्रेय राजकरण दफ्तरी को जाता है। राष्ट्रीय संस्थानों के द्वारा दफ्तरीजी को 'कोलम्बस ऑफ टी इन बिहार', 'भारतीय उद्योग रत्न ऐवार्ड' एवं 'इंदिरा गांधी शिरोमणी एवार्ड' से भी नवाजा गया।

किशनगंज के श्रावक-श्राविकाएं–बिहार प्रदेश के तेरापंथ समाज की दृष्टि से किशनगंज सर्वोपरि माना जा सकता है। यहां का श्रावक समाज विनीत और पूर्णरूपेण समर्पित है। परम श्रद्धेय आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ, ग्यारहवें अधिशास्ता परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण ने अनेक श्रावक-श्राविकाओं की श्रद्धा-भक्ति और सेवा भाव मूल्यांकन कर उन्हें विशिष्ट संबोधनों से संबोधित किया है। यहां के अनेक श्रावकों ने अपनी सेवा भावना से विशिष्ट पहचान बनाई है। अनेकानेक प्रबुद्ध श्रावकों ने तेरापंथ समाज की केन्द्रीय संस्थाओं के

पदों पर रहते हुए अपने दायित्व का निर्वहन कर अपनी सेवाएं दी है और दे रहे हैं। केन्द्रीय संस्थाओं द्वारा समय समय पर अनेक सम्मानों द्वारा स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं को सम्मानित भी किया गया है। किशनगंज तेरापंथ समाज के लिए गौरव की बात है। श्री भीकमचंदजी दफ्तरी को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' के सम्मान से सम्मानित किया गया, श्रीमती लक्ष्मीदेवी घीया, स्व. श्रीमती हुलासी देवी दूगड़, श्रीमती कान्ता देवी दफ्तरी (श्री राजकरणजी दफ्तरी की माताश्री) एवं श्रीमती चन्द्रकला देवी दफ्तरी को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' से सम्मानित किया जा चुका है। स्थानीय स्तर पर भी जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ महिला मण्डल व अणुव्रत समिति के माध्यम से कार्यकर्ता अपनी निष्ठापूर्ण सेवाएं दे रहे है, इनके साथ-साथ किशोर मण्डल, तेरापंथ कन्या मण्डल भी पूर्णतः सक्रिय है। आचार्यों की कृपा दृष्टि इस क्षेत्र पर बनी रही एवं यह क्षेत्र धर्मसंघ के विकास में सदा संलग्न बना रहे यही हमारी मंगलकामना, आंतरिक अभिलाषा और सुदृढ़ संकल्प है। स्थानीय ज्ञानशाला नियमित रूप से चल रही है।

महासभा के बिहार प्रभारी श्री राजकरण दफ्तरी, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निवर्तमान क्षेत्रीय प्रभारी श्री राजेश बैद व श्री मनीष दफ्तरी, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल कार्यकारिणी सदस्या श्रीमती कान्ता देवी दफ्तरी आदि कार्यकर्ता धर्मसंघ में किशनगंज का सुदृढ़ प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। सूरत चातुर्मास प्रवास में परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा श्री राजकरण दफ्तरी को 'कर्मठ कार्यकर्ता' के रूप में उल्लेखित किया गया। इस प्रकार तेरापंथ धर्मसंघ में किशनगंज के श्रावक समाज की सेवाएं भी उल्लेखनीय है।

वर्तमान में किशनगंज विधान सभा के क्षेत्र की आबादी लगभग 3 लाख के आसपास है। यहां जैन समाज के लगभग 250 परिवार है जिनमें से 135 परिवार तेरापंथी है। आचार्यश्री महाश्रमणजी ने महती कृपा कर किशनगंज को 152वें मर्यादा महोत्सव के आयोजन का शुभ अवसर प्रदान कराया है। तेरापंथ समाज ही नहीं अपितु किशनगंज का जन मानस उत्सुकता व उल्लास के साथ इस आयोजन को सफल बनाने के लिए कटिबद्ध है तथा पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में श्रद्धानत है।

भारत, नेपाल एवं अन्य देशों में प्रवासित धर्मसंघ के समस्त श्रावक-श्राविकाओं को मर्यादा महोत्सव पर हमारा सादर आमंत्रण है कि आप सपरिवार अधिक से अधिक संख्या में किशनगंज पधारें और आचार्यप्रवर के सेवा दर्शन का लाभ उठाएं। सभी का स्नेह प्राप्त होगा, ऐसा विश्वास है।

आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति, किशनगंज

सचिव	स्वागताध्यक्ष	अध्यक्ष
बिमलकुमार दफ्तरी	**डॉ. मोहनलाल जैन**	**राजकरण दफ्तरी**
(07250605060)	(09431232005)	(09430055555)

गुवाहाटी : इतिहास के झरोखे से

नैसर्गिक सौंदर्य से संपन्न गुवाहाटी असम की राजधानी है। यह ब्रह्मपुत्र नद तट के पर बसा पूर्वोत्तर का मुख्य शहर है। प्राचीनकाल 400 ई. में गुवाहाटी कामरूप की राजधानी यानि 'प्राग्ज्योतिषपुर यानि' (ज्योतिष शास्त्र का नगर) के नाम से जाना जाता था। गुवाहाटी के मिथक और इतिहास हजारों साल पुराने हैं। महाभारत काल में 'पूर्व के प्रकाश' के नाम से प्रसिद्ध यह स्थान पौराणिक असुर राजा नरकासुर की राजधानी एवं महाभारत के अनुसार भगदत्त की राजधानी थी। कहा जाता है कि यहीं पर सौंदर्य और जीवन के स्रोत हिंदू देव कामरूप का पुनर्जन्म हुआ था। देवी कामाख्या का प्राचीन शक्तिपीठ, प्राचीन एवं अद्वितीय ज्योतिष मंदिर नवग्रह, वशिष्ठ मंदिर एवं अन्य स्थानों में प्राप्त पुरातात्त्विक प्रमाण इसके प्राचीन पौराणिक होने के दावे का समर्थन करते हैं। सातवीं शताब्दी के महान यात्री ह्वेनसांग ने इस शहर का वर्णन किया है। 17वीं सदी का यह नगर बार-बार मुसलमान तथा अहोम शासकों के हाथों में आता-जाता रहा और अंततः यह सन् 1681 में निचले असम के अहोम प्रशासक का मुख्यालय बना। सन् 1786 में अहो राजा ने इसे अपनी राजधानी बना लिया। गुवाहाटी पर सन् 1816 से सन् 1826 तक बर्मियों का कब्जा रहा। यांदाबू की संधि के द्वारा इसे ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंप दिया गया। सन् 1874 में असम की राजधानी को यहां से 108 किलोमीटर दूर शिलांग ले जाया गया। सन् 1973 से गुवाहाटी असम की राजधानी है। गुवाहाटी के दिसपुर में असम विधानसभा एवं सचिवालय हैं। यह पूर्वोत्तर का प्रवेश द्वार है। गुवाहाटी असम का महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र तथा नदी बंदरगाह है। इसे विश्व का सबसे बड़ा चाय का बाजार माना जाता है। यहां गुवाहाटी चाय नीलामी केंद्र एवं गुवाहाटी तेल शोधनागार है। यहां तीन औद्योगिक क्षेत्र हैं, जिनमें काफी संख्या में विभिन्न प्रकार के उत्पाद तैयार करने वाली इकाइयां हैं।

गुवाहाटी की आबादी मिलीजुली है। भारत के हर प्रान्त के लोग यहां बसते हैं जिनमें मुख्य असमिया, बंगाली, राजस्थानी, बिहारी, नेपाली, पंजाबी एवं पूर्वोत्तर के विभिन्न आदिवासी मूल के लोग हैं। यहां पर असमिया, बंगाली, हिन्दी, अंग्रेजी भाषाएं बोली जाती हैं।

यहां गौहाटी विश्वविद्यालय, भारतीय तकनीकी संस्थान (आईआईटी), इंजीनियरिंग एवं मेडिकल कॉलेज जैसे शिक्षण संस्थान हैं। गुवाहाटी में खेलों के लिए पर्याप्त ढांचागत सुविधा उपलब्ध है। सन् 2007 में यहां राष्ट्रीय खेल आयोजित हुए थे। यहां अनेक उच्चकोटि की सुविधा से युक्त स्टेडियम भी हैं।

गुवाहाटी सड़क, रेल एवं हवाई मार्ग से पूरे देश से जुड़ा है। यहां से सभी प्रमुख शहरों के लिए रेल एवं हवाई सेवा उपलब्ध है। यह पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों से भी भलीभांति जुड़ा हुआ है। गोपीनाथ बोरदोलोई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, गुवाहाटी रेलवे स्टेशन एवं कामाख्या स्टेशन एवं रूपराम

ब्रह्म अंतर्राष्ट्रीय बस अड्डा यातायात की सुविधा के लिए उपलब्ध है।

गुवाहाटी शहर पर्यटन की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। कई स्थानीय मेले तथा उत्सव यहां मनाये जाते हैं। शहर के बीचोंबीच स्थित शुक्रेश्वर का जनार्दन मंदिर, चित्रांचल पहाड़ी पर बना नवग्रह मंदिर, नगर के केंद्र से 8 किलोमीटर फासले पर पवित्र नीलांचल की पहाड़ी पर स्थित कामाख्या मंदिर धार्मिक पर्यटन के केंद्र हैं। कामाख्या मंदिर तांत्रिक अनुष्ठानों तथा वैश्विक मातृसत्ता की प्रतीक शक्ति का उपासना स्थल है। प्रत्येक वर्ष कामाख्या में लगने वाले अम्बुबासी मेले में लाखों श्रद्धालु दूर-दूर से आते हैं। ब्रह्मपुत्र नदी के मयूर द्वीप में स्थित उमानंद मंदिर एवं नगर से 12 किलोमीटर दूर स्थित वशिष्ठ आश्रम भी दर्शनीय हैं। इसके अलावा शंकरदेव कलाक्षेत्र, बालाजी मंदिर, एकोलैंड, चिड़ियाखाना एवं वनस्पति उद्यान, दीपोरबील भी पर्यटन की दृष्टि से आकर्षण के केंद्र हैं।

गुवाहाटी शहर तेरापंथ के मानचित्र पर अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। यहां श्रद्धा के लगभग 1300 परिवार वर्तमान में निवास करते हैं, जिनमें से कुछ तो सैकड़ों साल से यहां रहते आये हैं। यहां के तेरापंथी श्रावक उद्योग, व्यापार, शिक्षा एवं विभिन्न पेशों में काफी सक्रिय एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। तेरापंथी सभा, महिला मंडल, युवक परिषद, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति एवं ज्ञानशाला जैसी प्रतिनिधि संस्थाएं यहां सुगठित रूप से सक्रिय हैं।

गुवाहाटी में तेरापंथ का इतिहास सौ साल से भी पुराना है। बीसवीं सदी के प्रारंभ से ही अर्हत वंदना का कार्यक्रम यहां के एक प्रतिष्ठित व्यावसायिक प्रतिष्ठान से शुरू किया गया, जो अभी तक नियमित रूप से चल रहा है। पिछली सदी के छठे दशक में गुवाहाटी तेरापंथी सभा का गठन हुआ एवं इसका अस्थायी कार्यालय मेसर्स जसराज तिलोकचंद के यहां रखा गया। यहां के श्रावकों की अर्ज पर आचार्य तुलसी ने चारित्रात्माओं का प्रथम चातुर्मास गुवाहाटी को संवत् 2024 में प्रदान किया। आज तक चारित्रात्माओं के 19 चतुर्मास गुवाहाटी में संपन्न हो चुके हैं। इसके साथ ही अनेक समणी केंद्र भी यहां परिसंपन्न हो चुके हैं। विक्रम संवत् 2032 में साध्वी श्री गोरांजी (राजगढ़) ने असम में प्रथम जैन भागवती दीक्षा साध्वी राजकुमारीजी को आचार्य तुलसी के निर्देशानुसार प्रदान की एवं एक भव्य दीक्षा समारोह का आयोजन नगांव में संपन्न हुआ।

अनेक श्रावकों-श्राविकाओं की संघीय सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए पूज्य गुरुदेव ने समय-समय पर शासनसेवी, श्रद्धानिष्ठ श्रावक, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति, कल्याण मित्र जैसे गरिमामय संबोधनों से संबोधित किया।

अनेक श्रावक-श्राविकाएं केन्द्रीय संस्थाओं में महत्त्वपूर्ण पदों पर रहते हुए अपनी सेवाएं प्रदान करते आ रहे हैं। वर्तमान में गुवाहाटी के ही वरिष्ठ श्रावक 'शासनसेवी' श्री बिमलकुमार नाहटा महासभा में प्रधान न्यासी के रूप में एवं अन्य केन्द्रीय संस्थाओं में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

आज गुवाहाटी समाज के पास एक भव्य एवं विशाल तेरापंथ भवन शहर के बीचोंबीच स्थित है। इसके लिए समाज के आर्थिक सहयोग से

भूमि सत्तर के दशक में क्रय की गयी एवं निर्माण कार्य सन् 1981 में पूरा किया गया। इसके पश्चात् भवन के ठीक पीछे एक विशाल भूखंड और क्रय कर लिया गया एवं वर्तमान भवन का विस्तार कर दिया गया। चार मंजिला तेरापंथ भवन न केवल चारित्रात्माओं के प्रवास एवं उपासना स्थल के रूप में उपयोग में आ रहा है, बल्कि विभिन्न सामाजिक गतिविधियों का केंद्र है। भवन में सामयिक, अर्हत् वंदना, भक्ताम्बर पाठ, ज्ञानशाला एवं उपासक प्रशिक्षण का क्रम नियमित रूप से चलता है।

समाज की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए एक साढ़े तीन बीघा भूमि स्थानीय गरल, न्यू एयरपोर्ट रोड, धारापुर में क्रय की गयी। आवश्यक भवन निर्माण के लिए आचार्य तुलसी महाश्रमण रिसर्च फाउंडेशन का गठन किया गया। दो विशाल भवन समाज के उपयोग के लिए तैयार हो चुके हैं।

उल्लेखनीय है कि समाज उपयोग के लिए निर्मित इस विशाल एवं सुरम्य परिसर में आचार्यश्री महाश्रमण ने अपना 2016 का पावन चातुर्मास करने की स्वीकृति प्रदान की है। पांच लाख वर्ग फीट के विशाल परिसर में एक ही स्थान पर सारी प्रवास व्यवस्थाओं को नियोजित किया जा रहा है।

सम्पूर्ण पूर्वोत्तर तथा विशेषत: गुवाहाटी की धरा पर यह परम सौभाग्य है कि तेरापंथ धर्मसंघ के 256 वर्षों के इतिहास में किसी भी आचार्य प्रवर का पावन चातुर्मास इसे मिलने जा रहा है। तेरापंथ के एकादशम् अधिशास्ता परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण 01 जुलाई 2016 को अपनी धवल सेना के साथ गुवाहाटी पधारेंगे। शहर के विभिन्न क्षेत्रों को अपनी चरणरज से पवित्र करते हुए पूज्यवर का दस जुलाई को चातुर्मास स्थल में मंगल प्रवेश होगा। इसके साथ ही गुवाहाटी पूरे चार मास आयोजित होने वाले विभिन्न आयोजनों, उत्सवों एवं महोत्सवों का साक्षी बनेगा। पूज्य आचार्य प्रवर की इस महती कृपा को पाकर गुवाहाटी एवं पूरा पूर्वोत्तर भारत कृतकृतज्ञ है।

देश-विदेश में प्रवासित सधार्मिक श्रावक-श्राविकाओं को हमारा सादर आमंत्रण है कि आप सपरिवार अधिक से अधिक संख्या में गुवाहाटी पधार कर गुरूसेवा का लाभ लेवें एवं ऐतिहासिक चतुर्मास के स्वर्णिम क्षणों के साक्षी बनें। आपका आगमन हमारा सौभाग्य होगा। आशा है कि आपके स्नेह व सहयोग से हम तेरापंथ धर्मसंघ के शिखर पर एक नया मंगल कलश अर्पित करने में सक्षम होंगे।

निवेदक

आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति, गुवाहाटी

अध्यक्ष	**महामंत्री**
बिमल कुमार नाहटा	**सुपारसमल बैद**
मो. 09864021770	**मो. 09864039162**

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी

अध्यक्ष	**मंत्री**
सुनील कुमार सेठिया	**निर्मल कोटेचा**
मो. 09864044599	**मो. 08811077440**

अध्यात्म ऊर्जा का केन्द्र : जैन विश्व भारती

विश्व इतिहास में मानव संस्कृति को सार्थक दिशा देने वाले महापुरुषों में क्रांतिकारी द्रष्टा, विश्वसंत गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के स्वप्नों की साकार प्रतिमान जैन विश्व भारती की स्थापना शिक्षा, शोध साधना एवं सेवा के विशेष उद्देश्यों के साथ सन् 1970 में राजस्थान के नागौर जिले के लाडनूं नगर में हुई। जैन विश्व भारती अहिंसा और शांति का अनुपम सांस्कृतिक केन्द्र है। शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय इन सात महान प्रवृत्तियों को अपने आप में समेटे हुए यह संस्था तपोवन का रूप ले चुकी है और यहां के प्रकंपन यह इंगित दे रहे हैं कि यह प्राचीन काल से कोई तपोभूमि रही है। तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक संरक्षण व निर्देशन में संस्था निरन्तर गतिशील है।

शिक्षा

जैन विश्व भारती की स्थापना जिन उद्देश्यों को लेकर हुई थी उनमें से एक मुख्य प्रवृत्ति है–शिक्षा। इस उद्देश्य की पूर्ति यहां प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक समस्त शैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। जैन विश्व भारती के तत्त्वावधान में वर्तमान में विमल विद्या विहार सीनियर सेकेण्डरी स्कूल तथा महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर एवं टमकोर संचालित हैं। मातृ संस्था जैन विश्व भारती के संरक्षण में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय से अब तक लगभग 45,000 विद्यार्थियों ने शिक्षा प्राप्त की है जिनमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने उच्च पदों पर पहुंच कर संस्था का गौरव बढ़ाया है।

भावी पीढ़ी में संस्कारों के संरक्षण तथा आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के विकास की दृष्टि से **'समण संस्कृति संकाय'** के अंतर्गत जैन विद्या की शिक्षा प्रदान की जाती है।

मनुष्य के बौद्धिक विकास के साथ मानसिक, भावनात्मक और चारित्रिक विकास हेतु आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने **'जीवन विज्ञान'** की परिकल्पना प्रस्तुत की। ध्यान, योग एवं शिक्षण प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षा का यह क्रांतिकारी प्रयोग जैन विश्व भारती के अंतर्गत **'केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी'** द्वारा साकार हो रहा है।

सेवा

शिक्षा के साथ-साथ सेवा के क्षेत्र में भी जैन विश्व भारती अग्रणी है। जैन विश्व भारती परिसर में **'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला'** तथा बीदासर में **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र'** सुचारु रूप से संचालित हैं।

'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला' द्वारा चिकित्सा सेवा विषयक जन-कल्याणकारी प्रवृत्ति का संचालन किया जाता है। यहां जिन औषधियों का निर्माण होता है वे आयुर्वेद विभाग से प्राप्त ड्रग मैन्युफैक्चरिंग लाइसेन्स के अंतर्गत जी.एम.पी. प्रमाणित हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा, एक्युप्रेशर एवं फिजियोथेरेपी पद्धति से रोगियों की चिकित्सा हेतु **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी मानव कल्याण केन्द्र'** की स्थापना जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में बीदासर में की गई। यहां आधुनिक उपकरणों द्वारा व्यायाम की सुविधा उपलब्ध है। वर्तमान में केन्द्र के अंतर्गत होमियोपैथिक चिकित्सा से रोगियों को स्वास्थ्य लाभ दिया जा रहा है।

साधना

प्रेक्षाध्यान–आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा निर्देशित प्रेक्षाध्यान पद्धति के निरंतर प्रयोग, प्रशिक्षण एवं शोध का केन्द्र है जैन विश्व भारती स्थित–**'तुलसी अध्यात्म नीडम्'**, जहां योग एवं अध्यात्म साधना के अभ्यास एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति के भाव परिष्कार व संवेग परिवर्तन के प्रयोग होते हैं। सन् 1978 में स्थापित तुलसी अध्यात्म नीडम् का उद्देश्य है–प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण, विकास एवं अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करना।

अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका 'प्रेक्षाध्यान' का विगत 31 वर्षों से जैन विश्व भारती के अंतर्गत तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है।

साहित्य

साहित्य प्रकाशन एवं वितरण—साहित्य प्रकाशन एवं वितरण जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन विद्या, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान आदि से संबंधित साहित्य के साथ आचार्य भिक्षु, श्रीमद् जयाचार्य, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण एवं साधु-साध्वियों, समण-समणीवृंद तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित/सम्पादित साहित्य का प्रकाशन विगत लगभग 39 वर्षों से किया जा रहा है। जैन विश्व भारती गत 2-3 वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अन्य प्रकाशकों के साथ मिलकर भी साहित्य प्रकाशन व वितरण का कार्य कर रही है।

शोध

जैन विश्व भारती की स्थापना के उद्देश्यों में **शोध** का विशेष स्थान है। पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने इसकी स्थापना के उद्देश्यों में जैन धर्म एवं दर्शन के उच्च-स्तरीय शोध संस्थान की परिकल्पना सामने रखी थी। उसी परिकल्पना की सुखद परिणति स्वरूप जैन विश्व भारती की शोध प्रवृत्ति के अंतर्गत आगम सम्पादन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है। यह कार्य पूर्व में आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशन में चल रहा है। आगम सम्पादन के प्रबन्धन का सारा दायित्व जैन विश्व भारती द्वारा निर्वहन किया जा रहा है।

हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग—जैन विश्व भारती में अनेक प्राचीन एवं दुर्लभ जैन हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनकी सुरक्षा एवं संरक्षण जैन विश्व भारती के हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग के अंतर्गत किया जा रहा है।

समन्वय

पुरस्कार एवं सम्मान—जैन विश्व भारती द्वारा कुल 10 पुरस्कारों का संचालन विभिन्न प्रायोजकों के सहयोग से किया जा रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार, आचार्य तुलसी अनेकान्त सम्मान, आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार, संघ सेवा पुरस्कार, जय तुलसी विद्या पुरस्कार, आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान, महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषी पुरस्कार, जीवन विज्ञान पुरस्कार, गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार आदि पुरस्कारों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएं देने एवं उल्लेखनीय कार्य करने वालों को प्रोत्साहित किया जाता है और उनकी प्रतिभा का सम्यक् मूल्यांकन किया जाता है।

संस्कृति

तुलसी कलादीर्घा—जैन विश्व भारती में स्थित तुलसी कलादीर्घा (आर्ट गैलरी) में जैन धर्म को दर्शाने वाली प्राचीन एवं अर्वाचीन चित्रों एवं हस्तकलाओं की प्रचुर सामग्री का संग्रह किया गया है। दुर्लभ, कलापूर्ण, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व की प्रदर्शन योग्य सामग्री के साथ तेरापंथ के आचार्यों को सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से संबंधित प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र एवं अन्य सामग्री को यहां पर शो विंडो में कलापूर्ण ढंग से सुसज्जित किया गया है।

उक्त सभी गतिविधियों के साथ सुरम्य हरीतिका से सुशोभित परिसर जैन विश्व भारती के बाह्य सौन्दर्य की मुखर कहानी कह रहा है। जैन विश्व भारती परिवार आप सभी को सादर आमंत्रित करता है। आप यहां पधारें एवं यहां संचालित गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें। संस्था के विकास हेतु आपके अमूल्य सुझावों एवं विचारों का स्वागत है। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें—

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)

फोन : (01581) 226025/80, फैक्स : 227280

ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

वेबसाइट : www. jvbharati.org

प्रेक्षाध्यान

प्रेक्षाध्यान : एक परिचय

प्रेक्षाध्यान हमारे प्राचीन ग्रंथों, आधुनिक विज्ञान और अनुभव का समन्वय है। प्रेक्षाध्यान हमारे विचारों और चेतना को शुद्ध करने का अभ्यास है तथा आत्म-साक्षात्कार की एक प्रक्रिया है। प्रेक्षाध्यान के अभ्यास के द्वारा हम अपने स्वभाव, व्यवहार और व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं। सरल शब्दों में प्रेक्षा का अर्थ है—'अपने आपको देखना, अपने शरीर, मन और आत्मा के सूक्ष्म स्पन्दनों को राग-द्वेष से मुक्त होकर केवल देखना और जानना।'

प्रेक्षाध्यान की मुख्य निष्पत्ति है—चित्त की शुद्धि। हमारे जीवन में संतुलन, आनंद और शांति का अनुभव उपलब्ध कराने में प्रेक्षाध्यान प्रमुख भूमिका निभाता है। मानसिक तनावों से मुक्ति, ऊर्जा के रूपान्तरण, चेतना के ऊर्ध्वारोहण और एकाग्रता के विकास के लिए प्रेक्षाध्यान वास्तव में जीवन का वरदान है। व्याधि, आधि और उपाधि को समाप्त करने वाला प्रेक्षाध्यान समाधि का प्रवेश द्वार है। इसके साथ-साथ विभिन्न रोगों के उपचार के लिए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग लाभदायक हैं।

प्रेक्षा फाउण्डेशन

प्रेक्षाध्यान जैन विश्व भारती की एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति है। प्रेक्षाध्यान संबंधी समग्र गतिविधियों का नियमन जैन विश्व भारती के अन्तर्गत गठित प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा होता है। प्रेक्षा फाउण्डेशन का उद्देश्य है—परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी एवं परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के अमूल्य अवदान 'प्रेक्षाध्यान' को आचार्यश्री महाश्रमणजी के कुशल आध्यात्मिक निर्देशन में निष्ठा के साथ संचालित करते हुए विश्वव्यापी बनाकर मानवजाति की आध्यात्मिक सेवा करना।

प्रेक्षावाहिनी

प्रेक्षाध्यान में रूचि रखने वाले साधकों के समूह का नाम है—'प्रेक्षावाहिनी'। प्रेक्षाध्यान में रूचि रखने वालों को प्रेक्षाध्यान के अभ्यास, प्रयोग एवं प्रशिक्षण के लिए स्थानीय स्तर पर एक सुव्यवस्थित व्यवस्था उपलब्ध हो सके एवं साधकों में परस्पर संपर्क एवं संवाद बना रहे, इस दृष्टि से देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रेक्षावाहिनीयां गठित की जा रही है। कम से कम दस साधक मिलकर किसी स्थान पर प्रेक्षावाहिनी गठित कर सकते हैं। गठित प्रेक्षावाहिनी द्वारा प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को प्रेक्षाध्यान की एक घंटे की कक्षा आयोजित की जाती है, जिसमें सामुहिक रूप से प्रेक्षाध्यान का अभ्यास व प्रयोग किये जाते हैं। प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा मनोनीत निर्देशक मण्डल द्वारा प्रेक्षावाहिनीयों का संचालन किया जाता है। अपने क्षेत्र में प्रेक्षावाहिनी के गठन हेतु निर्देशक मण्डल के वर्तमान निम्नलिखित सदस्यों से संपर्क किया जा सकता है—

१. श्री मर्यादा कुमार कोठारी, जोधपुर 9414134340

२. श्री सुबोध पुगलिया, जयपुर 9414056027

३. श्री विकास सुराणा, इचलकरंजी 9326021312
४. श्रीमती राज गुनेचा, दिल्ली 9268729037
५. श्रीमती अर्चना जैन, नागपुर 8149055123
६. श्री सुरेन्द्र ओसवाल, रायपुर 9425285121

प्रेक्षाध्यान पत्रिका

अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका प्रेक्षाध्यान का प्रकाशन विगत 36 वर्षों से हो रहा है। वर्तमान में प्रेक्षाध्यान पत्रिका के संपादक श्री अशोक संचेती, दिल्ली हैं। पत्रिका का सदस्यता शुल्क दसवर्षीय रु. 2,500/- है। पत्रिका की सदस्यता हेतु प्रेक्षा फाउण्डेशन से संपर्क किया जा सकता है।

प्रेक्षाध्यान शिविर

प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती, लाडनूं (राजस्थान) के सुरम्य व शांत परिसर में अष्टदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर प्रतिमाह आयोजित होते हैं, जिनमें चारित्रात्माओं एवं समण-समणीवृंद का सान्निध्य प्राप्त होता है तथा उनके द्वारा प्रेक्षाध्यान की कक्षाएं ली जाती है। प्रशिक्षित प्रशिक्षकगण द्वारा प्रेक्षाध्यान के प्रयोग व अभ्यास कराए जाते हैं। शिविर में भाग लेने वालों के लिए आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्थाएं यहां उपलब्ध हैं।

इन मासिक प्रेक्षाध्यान शिविरों की श्रृंखला में वर्ष 2016 में आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र एवं तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती, लाडनूं में निम्नलिखित तिथियां प्रस्तावित की गई है–

01. दिनांक 21-28 फरवरी 2016 (Mega Camp)
02. दिनांक 21-29 फरवरी 2016 (प्रेक्षा-प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर (Level-I & II)
03. दिनांक 11-18 मार्च 2016
04. दिनांक 11-18 अप्रैल 2016
05. दिनांक 11-18 जुलाई 2016
06. दिनांक 01-08 अगस्त 2016
07. दिनांक 11-18 सितम्बर 2016
08. दिनांक 01-08 अक्टूबर 2016
09. दिनांक 11-18 नवम्बर 2016
10. दिनांक 11-18 दिसम्बर 2016

प्रति शिविरार्थी निम्नानुसार पंजीकरण शुल्क निर्धारित है–

अटैच्ड रूम 2100/- रु. एवं ए.सी. रूम 7100/- रु.।

उक्त शिविरों मे भाग लेने के लिए पंजीकरण एवं अन्य जानकारी हेतु इच्छुक भाई-बहन प्रेक्षा फाउण्डेशन से संपर्क कर सकते हैं। ऑनलाईन पंजीकरण भी करवा सकते हैं।

प्रेक्षा फाउण्डेशन
तुलसी अध्यात्म नीडम्
जैन विश्व भारती परिसर
पोस्ट : लाडनूं-341306, जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन नं. : 01581-226119, मोबाईल नं. : 08233344482
ई-मेल: foundation@preksha.com, वेबसाईट: www.preksha.com

With Best Compliments from

जो साहसी और शक्ति संपन्न होता है, वह आदर्श पुरुष होता है।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

कंचनदेवी (धर्मपत्नी स्व. मदनलालजी बाफना)

महेन्द्र, पंकज, निशांत, आयुष बाफना

बैंगलुरु

Bafna Plastics

50/56, 1st Floor, Shivananda Building Mamulpet
Bengaluru-560053

fortunapet **Nishant Mouldings Pvt.Ltd.**

#2, Eralingamma Industrial Estate, Srigandakaval,
Vishwaneedam, Post-Sunkadakatte, Bengaluru-560091
Ph.: 080-23582671

With Best Compliments from

तुम दूसरों की बुराइयों को देखते हो।
जरा आंख मूंद यह भी खोजो, तुम्हारे में कितनी बुराइयां हैं ?

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

'शासनसेवी' बिमलकुमार, सन्दीप कुमार, प्रियंक नाहटा

(सरदारशहर-गुवाहाटी)

कामाख्या उमानन्द भवन, ए.टी. रोड, गुवाहाटी -781001 (असम)

दूरभाष : 0361-2545155, 2518288, 2544039, फैक्स : 2514939

Email : bimalnahataghy@gmail.com

With Best Compliments from

बाहर के मित्र भी उपयोगी बन सकते हैं।
भीतर के मित्र - अहिंसा आदि
परम उपयोगी होते हैं।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

पूज्य पिताजी स्व. रणजीतसिंह जी बैद की पुण्य स्मृति में

प्रकाश प्रमोद बैद

लाडनूं-कोलकाता

With Best Compliments from

धर्म ही एकमात्र ऐसा मित्र है, जो इहलोक और परलोक में साथ देता है,
दुर्गति से बचाता है और चिरस्थायी सुख-शांति प्रदान करता है।

- आचार्य महाश्रमण

स्व. हनुमानमलजी दूगड़ 'जौहरी' की पुण्य स्मृति में

: श्रद्धावनत :

गिन्नीदेवी दूगड़

मदनचंद, आलोक, अजित दूगड़

समस्त 'जौहरी' दूगड़ परिवार

(सरदारशहर-मुम्बई-सूरत)

DC-4220, Bharat Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex
Bandra (E) Mumbai-400051 | T : 022-23611056/57/58
F : 022-23611055 | E : royal_dpm@hotmail.com

701-702, Gangotri Tower, Kesariya Market
Gotalawadi, Katargam, Surat - 395004
T : 0261-2531700, 2532800 | F : 0261-2531100

नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान

दुनिया में शक्ति का महत्त्व होता है। शक्तिहीन व्यक्ति अपने आप में रिक्तता अनुभव करता है। कभी-कभी शक्तिविहीन मनुष्य अपने आपको दयनीय और असहाय भी अनुभव करता है। सबसे बड़ी शक्ति आध्यात्मिक शक्ति होती है। अन्य शक्तियों का भी अपना-अपना महत्त्व होता है।

गुरुदेवश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का एक नया उपक्रम प्रारंभ किया। आचार्यश्री महाश्रमण के निर्देशन में वह उसी रूप में विधिवत् चल रहा है। उसका उद्देश्य है—आत्मशुद्धि और ऊर्जा का विकास। उसकी कालावधि आश्विन शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की निर्धारित की गई है। चैत्र शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की कालावधि में भी इसकी आराधना की जा सकती है। संपूर्ण विधि एवं समय सारिणी इस प्रकार निश्चित की गई है—

प्रातः ९.३० से १०.००

'चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' — का पांच बार पाठ
चंदेसु निम्मलयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु — का तेरह बार पाठ
आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु—का तेरह बार पाठ
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु — का तेरह बार पाठ
आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु — का तेरह बार पाठ
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु — का इक्कीस बार पाठ
'चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।' — का पांच बार पाठ

ॐ ह्रीं क्लीं क्ष्वीं

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रसं।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ॥२॥
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥३॥
वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोई उवहम्मई।
अहागडेसु रीयंति, पुप्फेसु भमरा जहा ॥४॥
महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ॥५॥— का सात बार पाठ

प्रातः १०.०० से १०.३०—आध्यात्मिक प्रवचन

मध्याह्न २.३० से ३.१५ आगम पाठ का स्वाध्याय।

(दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि आदि के मूल पाठ का स्पष्ट व शुद्ध उच्चारण एवं व्याख्या)

पश्चिम रात्रि–४.४५ से ५.३०

उवसग्गहरं पासं (उपसर्गहर स्तोत्र) आदि पांच श्लोक एवं 'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण' का नौ बार पाठ। फिर 'विघनहरण' का जप।

उपसर्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं ।।१ ।।
विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ।।२ ।।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ।।३ ।।
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपायवब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।।४ ।।
इह संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ।।५ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण पास
विसहर वसह जिण फुल्लिंग ह्रीं श्रीं नमः ।।

विघनहरण

विघनहरण मंगलकरण, स्वाम भिक्षु रो नाम।
गुण ओलख सुमिरण करै, सरै अचिंत्या काम।।

जप और आगम-स्वाध्याय के साथ तप का योग भी आवश्यक माना गया है। तप में एकासन, आयंबिल, षड्विगय वर्जन, पंच विगय वर्जन और दस प्रत्याख्यान में से किसी एक तप की आराधना इस अवधि में की जाए। व्यक्तिगत इच्छा के अनुसार नौ दिनों तक एक ही तप अथवा वैकल्पिक तप की आराधना की जा सकती है।

निर्धारित कालावधि और करणीय क्रम को यथावत् रखते हुए स्थानीय सुविधानुसार समय में परिवर्तन भी किया जा सकता है। साधु-साध्वियों की भांति श्रावक-श्राविकाएं भी इसमें संभागी बन सकते हैं। संभागी श्रावक-श्राविकाओं के लिए निम्नांकित नियम भी अनुष्ठान काल में पालनीय हैं–

ब्रह्मचर्य का पालन, रात्रि भोजन-विरमण (चौविहार/तिविहार), जमीकंद का वर्जन।

अनुष्ठान का प्रारंभ प्रथम दिन प्रातः ९.३० से यानी प्रातःकालीन सत्र में किया जाए एवं अनुष्ठान का समापन रात्रि के ५.३० बजे यानी रात्रिकालीन सत्र में किया जाए।

विषय-प्रवेश

कोष्ठक विवरण

जय-तिथि-पत्रक का पहला कोष्ठक अंग्रेजी दिनांक का है और फिर वार का है। उसके बाद तिथि का कोष्ठक है। उसके आगे के दो कोष्ठक में क्रमशः इतने बजे व मिनट तक का संकेत है। छठा कोष्ठक नक्षत्र का है। सातवें व आठवें में नक्षत्र के कितने बजे व मिनट तक का सूचन है। नौवें व दसवें में क्रमशः सूर्योदय व सूर्यास्त कितने बजे होता है इसका निदर्शन है। सूर्योदय व सूर्यास्त लाडनूं को केन्द्र मानकर स्टेण्डर्ड टाइम में दिया गया है। ग्यारहवें कोष्ठक में प्रथम प्रहर कितने बजे आती है तथा बारहवें कोष्ठक में दिन का एक प्रहर कितने घंटे व मिनट का होता है, इसका दिग्दर्शन है। तेरहवें कोष्ठक में चन्द्रमा तथा चौदहवें कोष्ठक में विशेष विवरण के अंतर्गत योग तथा भद्राकाल है। ये भी बजे व मिनट के क्रम से हैं।

तिथि-पत्रक में बजे-मिनट रेलवे समय-सारिणी पद्धति से दिये गये हैं। मध्य रात्रि में १२ बजे से रेलवे समय सारिणी के अनुसार २४ बजे होता है, के बाद ०० समय से शुरू कर २४ बजे तक २४ घंटे मानते हुए चलता है। जैसे—चैत्र शुक्ला सप्तमी २१/४४ बजे है। इसका तात्पर्य है—यह तिथि उस दिन २१ बजकर ४४ मिनट तक है। अर्थात् रात्रि में ९ बजकर ४४ मिनट तक है। बैशाख कृष्णा तृतीया १७/३५ बजे है। इसका अर्थ है यह तिथि उस दिन सायं ५ बजकर ३७ मिनट तक रहेगी। इसी तरह चैत्र शुक्ला सप्तमी को आर्द्रा नक्षत्र १४/२४ बजे है। अर्थात् उस दिन दोपहर २ बजकर २४ मिनट तक है।

तिथि व नक्षत्र के बजे-मिनट बराबर में हैं। वे बजे, मिनट से स्पष्ट हैं। चंद्रमा के आगे संख्या ऊपर नीचे हैं। चंद्रमा के ऊपर वाली संख्या बजे व नीचे वाली मिनट है। जैसे—बैशाख कृष्णा द्वितीया को चंद्रमा वृश्चिक राशि में $\frac{०६}{२६}$ अर्थात् प्रातः ६ बजकर २६ मिनट पर मेष राशि में प्रवेश करेगा। चंद्रमा के लिए इतना विशेष है कि उसका प्रवेश काल दिया है। विशेष विवरण स्पष्ट है। इसमें योग व अन्य के आगे संख्या बराबर में हैं।

तिथि, नक्षत्र आदि के साथ जहां शून्य (०) अंकित है, वह उस दिन 'पूरे दिन और पूरी रात' है अर्थात् वह तिथि या नक्षत्र उस दिन सूर्योदय से पूर्व शुरू हो गया और दूसरे दिन सूर्योदय होने के बाद तक रहा। वह समय अगले दिन की पंक्ति में है। जैसे—चैत्र शुक्ला चतुर्दशी (द्वि.) को चित्रा नक्षत्र के आगे (०) अंकित है जिससे यह नक्षत्र पूरे दिन-रात है। चैत्र शुक्ला चतुर्दशी (प्रथम) के आगे (०) अंकित है अर्थात् यह तिथि पूरे दिन-रात है।

सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय होने के ठीक पहले तक का समय ''रात्रि समय'' और उसके बाद ''दिवा समय'' होता है।

विशेष विवरण के कोष्ठक में प्रदत्त योगों के सांकेतिक अक्षरों में पूर्ण नाम इस प्रकार हैं :—

- र.—रवि योग (शुभ व कुयोगनाशक)
- अ.—अमृत सिद्धि योग (शुभ)
- राज.—राजयोग (शुभ)
- कु.—कुमार योग (शुभ)

- सि.–सिद्धि योग (शुभ)
- मृ.–मृत्यु योग (अशुभ)
- व्या.–व्याघात योग (अशुभ)
- वै.–वैधृति (अशुभ)
- व्य.–व्यतिपात योग (अशुभ)
- ज्वा.–ज्वालामुखी योग(अशुभ)
- पं.–पंचक (अशुभ) घास, लकड़ी एकत्र करने, घर की छत बनाने, दक्षिण यात्रा करने में वर्जित।
- भ.–भद्राकाल (शुभ-अशुभ दोनों)
- यम.–यमघंट योग (अशुभ)

नोट : शास्त्रीय मान्यता है कि मध्याह्न के पश्चात् अशुभ योगों का दोष नहीं रहता।

भद्रा-काल

श्रेष्ठ कार्यों में भद्रा-काल होना वर्जित है, किन्तु शास्त्रकारों ने भद्रा को शुभ भी माना है, जो इस प्रकार है–मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक के चंद्रमा में भद्रा का वास स्वर्ग में रहता है। यह भद्राकाल शुभ और ग्राह्य है।

कन्या, तुला, धनु और मकर के चन्द्रमा में भद्रा का वास नागलोक (पाताल) में रहता है। यह भद्राकाल भी लक्ष्मीदायक-धनदायक होने से शुभ है।

कुंभ, मीन, कर्क और सिंह के चंद्रमा में भद्रा का वास मृत्युलोक में होता है। यह अशुभ है, इसलिए शुभ कार्यों में सर्वथा वर्जनीय है।

भद्राकाल समय-विशेष के साथ शुभ भी बताया है।

शुक्ल पक्ष की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और कृष्ण पक्ष की भद्रा सर्वसंज्ञक है। मतान्तर से रात्रि की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और दिन की भद्रा सर्वसंज्ञक है। सर्वसंज्ञक भद्रा के मुख की पांच घटी (२ घंटा) और वृश्चिक संज्ञक भद्रा की पुच्छ की तीन घटी (१ घंटा १२ मि.) शुभ कार्य में त्याज्य है।

तिथि-पत्रक के विवरण पृष्ठों के बाद कोलकाता, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बैंगलोर व जोधपुर–इन छह शहरों के महीने की पहली व पन्द्रहवीं तारीख के सूर्योदय व सूर्यास्त का समय दिया गया है।

समय-सारिणी के बाद नक्षत्र के नाम का अक्षर और राशि की तालिका है। फिर राशि स्वामी एवं गुरु दर्शन के नक्षत्र हैं। फिर घातचक्र है। इसके बाद यात्रा में चंद्र विचार, योगिनी विचार चक्र, दिशाशूल विचार चक्र तथा काल-राहू विचार चक्र है। इनसे अगले पृष्ठ पर सुयोग-कुयोग चक्र है। अंतिम पृष्ठ पर पोरसी प्रमाण, राहुकाल, दिन एवं रात्रि के चौघड़िये हैं।

चौघड़िया-अवलोकन

दिन का चौघड़िया सूर्योदय से प्रारंभ होता है तथा रात्रि का चौघड़िया सूर्यास्त से प्रारंभ होता है। एक दिन में आठ चौघड़िये व रात्रि में आठ चौघड़िये होते हैं।

चौघड़िया का काल दिन-रात छोटे-बड़े होने के अनुसार न्यूनाधिक होता रहता है। प्रत्येक दिन के सूर्योदय से सूर्यास्त तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने पर जो एक भाग प्राप्त होगा वह उस दिन में एक चौघड़िया का मान होगा, अर्थात् दिन की समयावधि का आठवां हिस्सा एक चौघड़िया होता है। इसी प्रकार सूर्यास्त से अगले सूर्योदय तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने से प्राप्त होने वाला एक हिस्सा रात्रि के चौघड़िये का मान होता है। अर्थात् रात्रि की समयावधि का आठवां हिस्सा रात्रि का एक चौघड़िया होता है।

चौघड़िये में उद्वेग, काल और रोग–ये तीन अशुभ हैं। शेष तीन लाभ,

अमृत और शुभ—ये चौघड़िये श्रेष्ठ होते हैं। शुक्र के अर्थात् चल (चंचल) वेला के चौघड़िये को भी अच्छा मानते हैं। श्रेष्ठ चौघड़िये में सभी कार्य करने प्रशस्त हैं। अमृत का चौघड़िया सभी शुभ कार्यों में अत्युत्तम है।

इस तिथि-पत्रक में लाडनूं को केन्द्र मानकर सूर्योदय एवं सूर्यास्त दिया गया है। उससे पूर्व दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट पहले सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। उससे पश्चिम दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट बाद में सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। लाडनूं अक्षांश २७°-४०', उत्तर पर है। रेखांश ७४°-२४' पूर्व है। अयनांश २३° १७'-१८' रेखांतर ३२ मिनट २० सैकिण्ड है। बेलान्तर-२ मिनट ३२ सैकिण्ड है। पलभा ६-१० है।

धार्मिक उपासना में पर्व तिथियों का अपना महत्त्व होता है। पक्खी आदि का प्रतिक्रमण तिथि के आधार पर करना पड़ता है। पहले इसे 'पक्खी' के नाम से संत तैयार करते थे। उसे हर सिंघाड़े (ग्रुप) को एक-एक दे दिया जाता था, बाद में 'लघु-पंचांग' के नाम से श्री हनूतमलजी सुराणा (चूरू) छपाने लग गये। परमाराध्य गुरुदेव व आचार्यवर की दृष्टि से पिछले कई वर्षों से इसका संपादन संतों द्वारा होने लगा। 'लघु पंचांग' के बाद 'जय पंचांग' के रूप में सामने आया। सन् १९८४ से इसका संपादन मेरे द्वारा होने लगा। वर्तमान में यह **'जय-तिथि-पत्रक'** के नाम से प्रकाशित हो रहा है।

२२ नवम्बर २०१५ **मुनि सुमेर (लाडनूं)**

शाहदरा, दिल्ली

विशेष अवगति

वर्ष के दिन—इस वर्ष मास १२, पक्ष २४, तिथि क्षय १६, तिथि वृद्धि ११, कुल दिन ३५५

गाज बीज की अस्वाध्याय नहीं—आषाढ़ कृष्णा १, मंगलवार, दिनांक २१ जून २०१६ से कार्तिक कृष्णा ८, रविवार, दिनांक २३ अक्टूबर २०१६ तक।

चंद्र ग्रहण (i) भाद्रपद शुक्ला १५, शुक्रवार, दिनांक १६/१७ सितम्बर २०१६

(ii) माघ शुक्ला १४/१५, शुक्रवार, दिनांक १० फरवरी २०१७

सूर्य ग्रहण—भारत में दिखाई नहीं देगा।

मलमास—(i) वर्ष प्रारंभ से चैत्र शुक्ला ७, बुधवार, दिनांक १३ अप्रैल २०१६ तक रहेगा। यह पिछले वर्ष फाल्गुन शुक्ला ६, सोमवार, १४ मार्च २०१६ से प्रारंभ हो चुका था।

(ii) पौष कृष्णा २, गुरुवार, १५ दिसम्बर २०१६ से प्रारंभ, माघ कृष्णा २, शनिवार, १४ जनवरी २०१७ को संपन्न।

(iii) चैत्र कृष्णा २, मंगलवार, १४ मार्च २०१७ को प्रारंभ, अगले वर्ष में चलेगा।

तारा— (१) गुरु अस्त—भाद्रपद शुक्ला ११, मंगलवार, दिनांक १३ सितम्बर २०१६ से प्रारंभ, आश्विन शुक्ला ६, गुरुवार, दिनांक ६ अक्टूबर २०१६ को संपन्न।

(२) शुक्र अस्त—(i) बैशाख शुक्ला ३, सोमवार, दिनांक ९ मई २०१६ से प्रारम्भ, आषाढ़ कृष्णा ८, मंगलवार, दिनांक २८ जून २०१६ को सम्पन्न।

(ii) चैत्र कृष्णा ९, बुधवार, दिनांक २२ मार्च २०१७ को प्रारंभ, चैत्र कृष्णा १२, शनिवार, दिनांक २५ मार्च २०१७ को सम्पन्न।

नोट—ग्रहण, मलमास तथा गुरु, शुक्र के अस्तकाल में विशिष्ट शुभ कार्य वर्जनीय है।

विशेष ज्ञातव्य

(क) विशेष मुहूर्त्त

(१) अभिजित मुहूर्त्त, (२) रवियोग, (३) अमृत का चौघड़िया

(४) दीपावली का प्रदोषकाल (सूर्यास्त से दो घड़ी-४८ मिनट तक)

(५) पुष्य नक्षत्र के साथ रविवार या गुरुवार सदा श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु-पुष्य विवाह में वर्जित है।

(ख) यात्रा के लिए आवश्यक

(१) यात्रा-कर्ता की जन्म-राशि से यात्रा दिन का चंद्रमा चौथे, आठवें में स्थित न हो। पंचांग में घातचक्र में दिये गये चंद्रमा को भी टालें। (जन्म-राशि ज्ञात न होने से प्रचलित नाम राशि)।

(२) यात्रा के समय सम्मुख चंद्रमा हो तो सब दोष नष्ट माने जाते हैं। पूर्व दिशा में जाने के लिए मेष, सिंह, धन का चंद्रमा, पश्चिम में मिथुन, तुला और कुंभ का, दक्षिण में वृष, कन्या, मकर का और उत्तर में कर्क, वृश्चिक और मीन का चंद्रमा सम्मुख रहता है। दाहिना चंद्रमा भी शुभ है।

(३) यात्रा-योग न मिलने पर अमृत का चौघड़िया अथवा अभिजित मुहूर्त्त सदैव ग्राह्य है। बुधवार को अभिजित शुभ नहीं।

(४) राहू काल-कुवेला का समय वर्जनीय है।

(५) मृत्यु योग आदि अशुभ योग वर्जनीय है।

(ग) यात्रा के लिए अन्य ज्ञातव्य

(१) सोमवार और शनिवार को पूर्व में, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम में, मंगलवार और बुधवार को उत्तर में तथा गुरुवार को दक्षिण में यात्रा न करें, क्योंकि दिशाशूल रहता है।

(२) उषाकाल में पूर्व में, गोधुलिकाल में पश्चिम में, मध्याह्न में दक्षिण में तथा मध्य रात्रि में उत्तर में यात्रा न करें, क्योंकि समयशूल रहता है।

(३) ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्व को, पूर्वाभाद्रपद में दक्षिण को, रोहिणी में पश्चिम को तथा उत्तराफाल्गुनी में उत्तर को यात्रा न करें, क्योंकि नक्षत्र-शूल रहता है।

(४) धनिष्ठा का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती को पंचक कहते हैं। इन दिनों में दक्षिण की ओर यात्रा वर्जनीय है।

(५) तिथियां ४,६,८,९,१२,१४,३० और शुक्ल पक्ष की एकम यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(६) भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति और विशाखा नक्षत्र यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(७) अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती यात्रा में विशेष शुभ नक्षत्र माने जाते हैं।

(८) उत्तर में २,१०; दक्षिण में ५,१३; पूर्व में १,९; पश्चिम में ६,१४ तिथियों में योगिनी रहती है। योगिनी के सामने या दाहिने होने पर यात्रा वर्जनीय है।

(९) पूर्व में शनिवार को, पश्चिम में मंगलवार को, उत्तर में रविवार को

तथा दक्षिण में गुरुवार को यात्रा का निषेध है क्योंकि काल-राहू सम्मुख रहता है।

(१०) शनिवार और बुधवार को ईशान कोण (पूर्वोत्तर) में, मंगलवार को वायव्य (पश्चिमोत्तर) में, रविवार, शुक्रवार को नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) में तथा सोमवार, गुरुवार को आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में विदिशाशूल है अतः यात्रा में वर्जनीय है।

दिशा-शूल परिहार—रवि को तांबूल, सोम को चंदन, मंगल को मट्ठा, बुध को पुष्प, गुरु को दही, शुक्र को घृत व शनि को तिल खाकर या देकर यात्रा करने में दिक्शूल-दोष मिटता है।

शकुन—यात्रा के समय लोहा, तेल, घास, मट्ठा, पत्थर, लकड़ी, बिलाव मिले तो अशुभ व दही, चावल, चांदी का घड़ा, पुष्प, हंस तथा मुर्दा शुभ है।

सुयोग के सामने सभी कुयोगों का नाश

इक्कस्स भए पंचाणणस्स, भज्जंति गय सय सहस्सा।

तह रवि जोग पणट्ठा, गयणम्मि गहा न दीसंति ।। यति वल्लभ ।।

एक शेर के सामने लाख हाथी भी भाग जाते हैं। एक सूर्य के आने पर आकाश में एक भी ग्रह नहीं दीखता। इसी तरह रवि योग होने पर अन्य अप्योग स्वतः अप्रभावी बन जाते हैं।

रवियोगे राजयोगे, कुमारयोगे असुद्ध दिहए वि।

जं सुह कज्जं कीरइ, तं सव्वं बहुफलं होइ ।। यतिवल्लभ ।।

अशुभ दिन में भी रवियोग, राजयोग व कुमारयोग होने पर जो भी शुभ कार्य किया जाये तो वह बहुत फलदायी होता है।

सिद्धियोगः कुयोगश्च, जायेतां युगपद्यदि।

कुयोगं तत्र निर्जित्य, सिद्धि योगो विजृम्भते ।। आरंभ सिद्धि ।।

सिद्धियोग व कुयोग यदि एक साथ हो तो कुयोग का फल नष्ट हो जाता है।

(घ) यात्रा-निवृत्ति पर प्रवेश मुहूर्त्त

शुभ नक्षत्र—अनु., चि., मृ., तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, ह., ध.।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

आजकल नक्षत्र चंद्रमा के अनुकूल होने पर रवि को भी प्रवेश करते हैं।

शुभ-तिथि—२,३,५,७,१०,११,१३,१५।

नोट : एक ही दिन में यात्रा और प्रवेश हो तो मात्र प्रवेश देखा जाए।

(च) दीक्षा-ग्रहण-मुहूर्त्त

शुभ मास—वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

शुभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा,अश्वि,रो.,रे.,अनु.,पुष्य.,स्वा.,पुन,श्र.ध., श.,मू.।

शुभ वार—रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ तिथि—२,३,५,७,१०,११,१३ शुक्ल पक्ष में;२,३,५ कृष्ण पक्ष में।

तीर्थंकरों के दीक्षा-कल्याणक दिन, नक्षत्र भी लिए जा सकते हैं।

नोट : गुरु अस्त न हो, अधिक मास व तिथि न हो।

(छ) विद्यारंभ आदि

शुभ तिथि—२,३,५,६,१०,११,१२ कृष्ण पक्ष २,३,५।

शुभ वार–बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–मृ, आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, मू, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, ध, श, तीनों पूर्वा।

नोट : सोमवार, मंगलवार, शनिवार को आरंभ किया हुआ कोई भी साहित्य सृजन, शोध-कार्य आदि सफलता का सूचक नहीं होता। जैन विद्या का सत्रारंभ रवि और शुक्र को श्रेष्ठ रहता है।

साहित्य-सृजन में आर्द्रा, पुनः, पुष्य, रे, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, अनु, नक्षत्र उत्तम माने गये हैं, बुध, गुरु, शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

(ज) जन्म के पाये

आर्द्रा नक्षत्र से १० नक्षत्र तक चांदी का, विशाखा नक्षत्र से ४ नक्षत्र तक लोहे का, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र से ६ नक्षत्र तक तांबे का तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र से ७ नक्षत्र तक सोने का पाया होता है।

प्रकारान्तर से जन्म-नक्षत्र के कालमान को समान चार भागों में बांट लिया जाता है। प्रथम भाग में जन्म होने से सोने का पाया, द्वितीय भाग में होने से चांदी का पाया, तृतीय भाग में होने से तांबे का पाया और चौथे भाग में होने से लोहे का पाया मानते हैं।

लग्न और चंद्रमा से भी पाया देखा जाता है। जन्म-कुंडली में लग्न से पहला, छठा, ग्यारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो सोने का पाया, लग्न से दूसरा, पांचवां तथा नौवां चंद्रमा पड़ा हो तो चांदी का पाया, लग्न से तीसरा, सातवां व दसवां चंद्रमा पड़ा हो तो तांबे का पाया मानते हैं। जन्म से चौथा, आठवां व बारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो लोहे का पाया मानते हैं। सोना एवं लोहे का पाया कष्टप्रद तथा चांदी व तांबे का पाया श्रेष्ठ माने जाते हैं।

अधिकांश ज्योतिषियों के मतानुसार लग्न और चंद्रमा से देखा गया पाया ही मान्य होता है। पूरे देश में प्रायः इसी का प्रचलन है।

(झ) वार संज्ञक नक्षत्र

आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा और मघा–ये वार संज्ञक नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में जन्म होने पर जातक का जन्म वारों में हुआ माना जाता है। इनमें उत्पन्न बच्चों का प्रायः वही नक्षत्र आने से नामकरण होता है। ज्येष्ठा की अंतिम चार घड़ी तथा मूल की पहली चार घड़ी अभुक्त मूल मानी जाती है जो कष्टदायक है। मूल के प्रथम चरण में जन्म होने से पिता के लिए, दूसरे में माता के लिए, तीसरे में आर्थिक पक्ष के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। मूल का चौथा चरण शुभ माना जाता है। इसके विपरीत आश्लेषा का प्रथम चरण शुभ माना जाता है। दूसरा धन के लिए, तीसरा माता के लिए तथा चौथा पिता के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। इसी प्रकार ज्येष्ठा का प्रथम बड़े भाई के लिए, दूसरा छोटे भाई के लिए, तीसरा माता के लिए और चौथा स्वयं बालक के लिए अनिष्टकारक माना जाता है।

(ट) ग्रहण

सब जगह एक साथ ग्रहण नहीं लगता, इस कारण उसका समय नहीं दिया जाता है। जो ग्रहण जहां नहीं दिखता, उस ग्रहण की अस्वाध्याय आदि रखने की जरूरत नहीं है।

संवत् २०७३ के विशेष पर्व-दिवस

१.	२५७वां भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, रामनवमी	चैत्र शुक्ला-९	१५ अप्रैल २०१६	शुक्रवार
२.	२६१५वीं महावीर जयन्ती (महावीर जन्म कल्याणक दिवस)	चैत्र शुक्ला-१३	१९ अप्रैल २०१६	मंगलवार
३.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ का सातवां महाप्रयाण दिवस	वैशाख कृष्णा-११	३ मई २०१६	मंगलवार
४.	अक्षय तृतीया	वैशाख शुक्ला-३	९ मई २०१६	सोमवार
५.	आचार्यश्री महाश्रमण का ५५वां जन्म दिवस	वैशाख शुक्ला-९	१५ मई २०१६	रविवार
६.	आचार्यश्री महाश्रमण का सातवां पदाभिषेक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०	१६ मई २०१६	सोमवार
७.	भगवान् महावीर केवलज्ञान कल्याणक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०	१६ मई २०१६	सोमवार
८.	आचार्यश्री महाश्रमण का ४३वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस)	वैशाख शुक्ला-१४	२० मई २०१६	शुक्रवार
९.	आचार्यश्री तुलसी का २०वां महाप्रयाण दिवस	आषाढ़ कृष्णा-३	२३ जून २०१६	गुरुवार
१०.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९७वां जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)	आषाढ़ कृष्णा-१३	२ जुलाई २०१६	शनिवार
११.	आचार्य भिक्षु का २९१वां जन्म दिवस एवं २५९वां बोधि दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१३	१७ जुलाई २०१६	रविवार
१२.	चातुर्मासिक पक्खी	आषाढ़ शुक्ला-१४	१९ जुलाई २०१६	मंगलवार
१३.	२५७वां तेरापंथ स्थापना दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१५	१९ जुलाई २०१६	मंगलवार
१४.	७०वां स्वतंत्रता दिवस	श्रावण शुक्ला १२	१५ अगस्त २०१६	सोमवार
१५.	श्रीमज्जयाचार्य का १३५वां निर्वाण दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२	२९ अगस्त २०१६	सोमवार
१६.	पर्युषण प्रारंभ दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१३	३० अगस्त २०१६	मंगलवार
१७.	पर्युषण पक्खी	भाद्रपद कृष्णा-१४	१ सितम्बर २०१६	गुरुवार
१८.	संवत्सरी महापर्व	भाद्रपद शुक्ला-५	६ सितम्बर २०१६	मंगलवार
१९.	कालूगणी का ८०वां स्वर्गवास दिवस	भाद्रपद शुक्ला-६	७ सितम्बर २०१६	बुधवार
२०.	२३वां विकास महोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-९ (प्र.)	१० सितम्बर २०१६	शनिवार

२१.	२१४वां भिक्षु चरमोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-१२/१३	१४ सितम्बर २०१६	बुधवार
२२.	दीपावली	कार्तिक कृष्णा-३०	३० अक्टूबर २०१६	रविवार
२३.	भगवान् महावीर का २५४३वां निर्वाण कल्याणक दिवस	कार्तिक कृष्णा-३०	३० अक्टूबर २०१६	रविवार
२४.	आचार्यश्री तुलसी का १०३वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)	कार्तिक शुक्ला-२	१ नवम्बर २०१६	मंगलवार
२५.	चातुर्मासिक पक्खी	कार्तिक शुक्ला-१५	१४ नवम्बर २०१६	सोमवार
२६.	भगवान् महावीर का २५८५वां दीक्षा कल्याणक दिवस	मार्गशीर्ष कृष्णा-१०	२३ नवम्बर २०१६	बुधवार
२७.	भगवान् पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस	पौष कृष्णा-१०	२३ दिसम्बर २०१६	शुक्रवार
२८.	६८वां गणतंत्र दिवस	माघ कृष्णा-१४	२६ जनवरी २०१७	गुरुवार
२९.	१५३वां मर्यादा महोत्सव	माघ शुक्ला-७	३ फरवरी २०१७	शुक्रवार
३०.	होलिका	फाल्गुन शुक्ला-१५	१२ मार्च २०१७	रविवार
३१.	चातुर्मासिक पक्खी	फाल्गुन शुक्ला-१५	१२ मार्च २०१७	रविवार
३२.	भगवान् ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस (वर्षीतप प्रारंभ)	चैत्र कृष्णा-८	२१ मार्च २०१७	मंगलवार

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में आयोजित होने वाले वार्षिक महत्त्वपूर्ण आयोजन

कार्यक्रम	स्थान	दिनांक	संपर्क सूत्र
महावीर जयन्ती	नलबाड़ी (असम)	19 अप्रैल 2016	9435028164
अक्षय तृतीया	तेजपुर (असम)	9 मई 2016	9954213279
सन् 2016 का चातुर्मास वि.सं. (2073)	गुवाहाटी (असम)	10 जुलाई 2016 (प्रवेश)	9864021770
153वां मर्यादा महोत्सव	सिलीगुड़ी (बंगाल)	3 फरवरी 2017	9475618061

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
८	शु	१	१३	०७	अ	२३	२४	६.१८	६.४८	९.२५	३.०७	मेष	कु. १३/०७ तक, राज. २३/२४ से, वै. १०/४२ तक
९	श	२/३	०१/०५	३५/५७	भ	२०	३६	६.१७	६.४८	९.२५	३.०८	वृष ०९/१७	र. २०/३६ से
१०	र	४	०२	५६	कृ	१८	०९	६.१६	६.४९	९.२४	३.०८	वृष	भ. १६/२३ से ०२/५६ तक, र. १८/०९ तक
११	सो	५	२४	३०	रो	१६	१३	६.१५	६.५०	९.२४	३.०९	मि. ०३/३०	कु. १६/१३ तक, अ. और र. १६/१३ से
१२	मं	६	२२	४४	मृ	१४	५६	६.१४	६.५०	९.२३	३.०९	मिथुन	र. १४/५६ तक, यम. १४/५६ से
१३	बु	७	२१	४४	आ	१४	२४	६.१३	६.५१	९.२३	३.०९	मिथुन	सूर्य अश्विनी और मेष में १९/४९ से, भ. २१/४४ से, मलमास समाप्त
१४	गु	८	२१	३२	पुन	१४	३८	६.१२	६.५१	९.२२	३.१०	कर्क ०८/३०	सि. १४/३८ तक, भ. ०९/३२ तक, गुरुपुष्यामृतयोग १४/३८ से (विवाहे वर्ज्य)
१५	शु	९	२२	०६	पु	१५	३८	६.११	६.५२	९.२१	३.१०	कर्क	पु. और र. १५/३८ से, ज्वा. २२/०६ से, श्री भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, श्री रामनवमी
१६	श	१०	२३	२०	आ	१७	१८	६.१०	६.५२	९.२०	३.१०	सिंह १७/१८	र. अहोरात्र, ज्वा. १७/१८ तक
१७	र	११	०१	०९	म	१९	३४	६.०९	६.५२	९.२०	३.११	सिंह	ज्वा. १९/३४ तक, भ. १२/११ से ०१/०९ तक, र. १९/३४ तक, राज. ०१/०९ से
१८	सो	१२	३	२१	पू.फा.	२२	१५	६.०८	६.५३	९.१९	३.११	क. ०४/१८	
१९	मं	१३	५	४८	उ.फा.	०१	११	६.०७	६.५४	९.१९	३.११	कन्या	र. ०१/११ से, व्या. १३/४९ से, २६१५वीं महावीर जयन्ती
२०	बु	१४	०	०	ह	०४	१५	६.०६	६.५४	९.१८	३.१२	कन्या	र. ०४/१५ तक, व्या. १४/४६ तक
२१	गु	१४	०८	२२	चि	०	०	६.०५	६.५५	९.१७	३.१२	तुला १७/४८	भ. ०८/२२ से २१/३९ तक
२२	शु	१५	१०	५५	चि	०७	२०	६.०४	६.५६	९.१७	३.१३	तुला	राज. ०७/२० तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२३	श	१	१३	२१	स्वा.	१०	१९	६.०३	६.५६	९.१६	३.१३	तुला	सि. १०/१९ तक, व्य. १७/४२ से
२४	र	२	१५	३६	वि	१३	०७	६.०२	६.५७	९.१६	३.१४	वृ. ०६/२६	राज. और मृ. १३/०७ से, भ. ४/३७ से, व्य. १८/२५ तक
२५	सो	३	१७	३५	अ	१५	४१	६.०१	६.५८	९.१५	३.१४	वृश्चिक	शुक्र मेष में १०/५२ से, भ. १७/३५ तक
२६	मं	४	१९	१२	ज्ये	१७	५५	६.००	६.५८	९.१५	३.१४	धन १७/५५	कु. १९/१२ से
२७	बु	५	२०	२४	मू	१९	४४	५.५९	६.५९	९.१४	३.१५	धन	यम. १९/४४ तक, सूर्य भरणी में ११/४४ से, कु. १९/४४ तक
२८	गु	६	२१	०५	पू.षा.	२१	०३	५.५८	७.००	९.१४	३.१५	म. ०३/१८	र. २१/०३ से, भ. २१/०५ से
२९	शु	७	२१	१०	उ.षा.	२१	४८	५.५७	७.००	९.१३	३.१६	मकर	भ. ९/१२ तक, र. २१/४८ तक
३०	श	८	२०	३७	श्र	२१	५५	५.५७	७.०१	९.१३	३.१६	मकर	
१	र	९	१९	२४	ध	२१	२२	५.५६	७.०१	९.१३	३.१६	कुंभ ०९/४३	पं. ०९/४३ से
२	सो	१०	१७	३०	श	२०	०९	५.५५	७.०२	९.१२	३.१६	कुंभ	पं., भ. ०६/३२ से १७/३० तक, कु. २०/०९ से
३	मं	११	१४	५९	पू.भा.	१८	२१	५.५४	७.०२	९.११	३.१७	मीन १२/१०	पं., कु. १४/५९ तक, राज. और सि. १८/२१ से, वै. ०८/५५ से ०५/२७ तक, आचार्यश्री महाप्रज्ञ का सातवां महाप्रयाण दिवस
४	बु	१२	११	५६	उ.भा.	१६	०१	५.५३	७.०३	९.१०	३.१७	मीन	पं., राज. ११/५६ तक
५	गु	१३/१४	०८/०४	३०/४८	रे	१३	१९	५.५२	७.०३	९.१०	३.१८	मेष १३/१९	भ. ०८/३० से १८/४० तक, पं. १३/१९ तक
६	शु	३०	०१	०१	अ	१०	२४	५.५१	७.०४	९.०९	३.१८	मेष	पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
७	श	१	२१	१९	भ. / कृ.	०७ / ०४	२६ / ३७	५.५१	७.०४	९.०९	३.१८	वृष १२/४३	अ. ०४/३७ से (प्रयाणे वर्ज्य)
८	र	२	१७	५३	रो	०२	०९	५.५०	७.०५	९.०९	३.१९	वृष	र. और राज. ०२/०९ से
९	सो	३	१४	५४	मृ	२४	१२	५.५०	७.०६	९.०९	३.१९	मि. १३/०६	अ. और र. २४/१२ तक, भ. ०१/३९ से, अक्षय तृतीया
१०	मं	४	१२	३३	आ	२२	५५	५.४९	७.०७	९.०९	३.१९	मिथुन	यम. २२/५५ तक, भ. १२/१३ तक, कु. और र. २२/५५ से, सूर्य कृतिका में ०५/५० से
११	बु	५	१०	५६	पुन	२२	२६	५.४९	७.०८	९.०९	३.२०	कर्क १६/२७	कु. २२/२६ तक, र. २२/२६ से
१२	गु	६	१०	०९	पु	२२	४७	५.४८	७.०८	९.०९	३.२०	कर्क	गुरुपुष्यामृतयोग २२/४७ तक (विवाहे वर्ज्य), र. २२/४७ तक
१३	शु	७	१०	१३	आ	२३	५८	५.४७	७.०९	९.०८	३.२०	सिंह २३/५८	मृ. २३/५८ तक, भ. १०/१३ से २२/३५ तक
१४	श	८	११	०७	म	०१	५४	५.४७	७.१०	९.०७	३.२१	सिंह	सूर्य वृषभ में १६/४२ से, र. ०१/५४ से, व्या. १९/११ से
१५	र	९	१२	४४	पू.फा.	०४	२५	५.४६	७.१०	९.०७	३.२१	सिंह	र. अहोरात्र, व्या. १९/३६ तक, आचार्यश्री महाश्रमण का ५५वां जन्म दिवस
१६	सो	१०	१४	५२	उ.फा.	०	०	५.४६	७.१०	९.०७	३.२१	क. ११/०८	र. अहोरात्र, भ. ०४/०४ से, भगवान महावीर केवलज्ञान दिवस, आचार्यश्री महाश्रमण का सातवां पदाभिषेक दिवस
१७	मं	११	१७	१९	उ.फा.	०७	२०	५.४५	७.१०	९.०६	३.२१	कन्या	र. ०७/२० तक, कु. ०७/२० से १७/१९ तक, भ. १७/१९ तक
१८	बु	१२	१९	५३	ह	१०	२६	५.४४	७.११	९.०६	३.२२	तुला २४/००	राज. १०/२६ से १९/५३ तक, व्या. २२/२९ से
१९	गु	१३	२२	२४	चि	१३	३२	५.४४	७.१२	९.०६	३.२२	तुला	र. १३/३२ से, व्या. २३/२९ तक
२०	शु	१४	२४	४३	स्वा	१६	२९	५.४३	७.१२	९.०५	३.२२	तुला	र. १६/२९ तक, भ. २४/४३ से, आचार्यश्री महाश्रमण का ४३वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस)
२१	श	१५	०२	४५	वि	१९	११	५.४३	७.१३	९.०५	३.२२	वृ. १२/३२	भ. १३/४६ तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२२	र	१	०४	२८	अ	२१	३४	५.४३	७.१३	९.०५	३.२२	वृश्चिक	मू. २१/३४ तक
२३	सो	२	०५	४९	ज्ये	२३	३८	५.४२	७.१४	९.०५	३.२३	धन २३/३८	
२४	मं	३	०	०	मू	०१	१९	५.४२	७.१५	९.०५	३.२३	धन	भ. १८/२१ से, राज. ०१/१९ से, सूर्य रोहिणी में ०२/०८ से
२५	बु	३	०६	४७	पू.षा.	०२	३८	५.४१	७.१५	९.०५	३.२३	धन	भ. ०६/४७ तक, राज. ०६/४७ तक
२६	गु	४	०७	२१	उ.षा.	०३	३२	५.४१	७.१५	९.०५	३.२३	म. ०८/१४	
२७	शु	५	०७	२९	श्र	०३	५९	५.४१	७.१६	९.०५	३.२४	मकर	कु. ०३/५९ तक, र. ०३/५९ से
२८	श	६	०७	०९	ध	०३	५७	५.४१	७.१६	९.०५	३.२४	कुंभ १६/०२	भ. ०७/०९ से १८/४८ तक, पं. १६/०२ से, र ०३/५७ तक, वै. २१/२७ से
२९	र	७ / ८	०६ / ०४	२० / ५८	श	०३	२३	५.४०	७.१७	९.०४	३.२४	कुंभ	पं., वै. १९/२८ तक
३०	सो	९	०३	०४	पू.भा.	०२	१७	५.४०	७.१७	९.०४	३.२४	मीन २०/३६	पं.
३१	मं	१०	२४	४०	उ.भा.	२४	४१	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	मीन	पं., सि. २४/४१ तक, भ. १३/५६ से २४/४० तक
१	बु	११	२१	५०	रे	२२	३९	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	मेष २२/३९	पं. २२/३९ तक, मू. २२/३९ से
२	गु	१२	१८	४१	अ	२०	१७	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	मेष	
३	शु	१३	१५	१८	भ	१७	४३	५.३९	७.१८	९.०४	३.२५	वृष २३/०४	भ. १५/२८ से ०१/३४ तक
४	श	१४	११	५१	कृ	१५	०६	५.३९	७.१९	९.०४	३.२५	वृष	अ. १५/०६ से (प्रयाणे वर्ज्य)
५	र	३० / १	०८ / ०५	३१ / २७	रो	१२	३८	५.३९	७.१९	९.०४	३.२५	मि. २३/३०	राज. ०५/२७ से　　पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
६	सो	२	०२	५२	मृ	१०	२८	५.३९	७.२०	९.०४	३.२५	मिथुन	अ. १०/२८ तक
७	मं	३	२४	५३	आ	०८	४८	५.३९	७.२१	९.०४	३.२५	कर्क ०१/५८	यम. ०८/४८ तक, र. ०८/४८ से २३/५८ तक, सूर्य मार्गशीर्ष में २३/५८ से
८	बु	४	२३	३८	पुन	०७	४७	५.३९	७.२१	९.०४	३.२५	कर्क	र. ०७/४७ से, भ. १२/१० से २३/३८ तक, व्या. ०५/२५ से
९	गु	५	२३	१३	पु	०७	३२	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	कर्क	गुरुपुष्यामृतयोग ०७/३२ तक (विवाहे वर्ज्य) र. ०७/३२ तक, व्या. ०४/१३ तक
१०	शु	६	२३	३८	आ	०८	०७	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	सिंह ०८/०७	मू. ०८/०७ तक, र. ०८/०७ से, कु. ०८/०७ से २३/३८ तक
११	श	७	२४	५१	म	०९	३१	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	सिंह	र. ०९/३१ तक, भ. २४/५१ से
१२	र	८	०२	४१	पू.फा.	११	३८	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	क. १८/१५	भ. १३/४२ तक, व्य. ०४/२१ से
१३	सो	९	०४	५८	उ.फा.	१४	१८	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	कन्या	र. १४/१८ से, कु. ०४/५८ से, व्य. ०५/१३ तक
१४	मं	१०	०	०	ह	१७	१६	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	कन्या	र. अहोरात्र, कु. १७/१६ तक, सूर्य मिथुन में २३/२१ से
१५	बु	१०	०७	२८	चि.	२०	२१	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	तुला ०६/४१	र. २०/२१ तक, भ. २०/४३ से
१६	गु	११	०९	५६	स्वा.	२३	१७	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	तुला	भ. ०९/५६ तक
१७	शु	१२	१२	१०	वि	०१	५७	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	वृ. १९/२०	र. ०१/५७ से
१८	श	१३	१४	०४	अ	०४	१५	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	वृश्चिक	र. ०४/१५ तक
१९	र	१४	१५	३२	ज्ये	०	०	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	वृश्चिक	भ. १५/३२ से ०४/०६ तक
२०	सो	१५	१६	३३	ज्ये	०६	०६	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	धन ०६/०६	कु. और ज्वा. १६/३३ से, पयस्वी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घ. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२१	मं	१	१७	०८	मू.	०७	३१	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	धन	कु. और ज्वा. ०७/३१ तक, राज. १७/०८ से, सूर्य आर्द्रा में २३/०१ से गाजबीज की अस्वाध्याय नहीं
२२	बु	२	१७	१९	पू.षा.	०८	३२	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	म. १४/४३	राज. ०८/३२ तक, भ. ०५/१५ से
२३	गु	३	१७	०६	उ.षा.	०९	१०	५.४०	७.२७	९.०७	३.२७	मकर	भ. १७/०६ तक, वै. ६/५२ से ०५/३१ तक, आचार्यश्री तुलसी का २०वा महाप्रयाण दिवस
२४	शु	४	१६	३२	श्र	०९	२६	५.४१	७.२७	९.०८	३.२७	कुंभ २१/२६	पं. २१/२६ से
२५	श	५	१५	३७	ध	०९	२१	५.४१	७.२७	९.०८	३.२७	कुंभ	पं.
२६	र	६	१४	२२	श	०८	५७	५.४२	७.२७	९.०८	३.२६	मीन ०२/२४	पं., र. ०८/५७ से, भ. १४/२२ से ०१/३६ तक
२७	सो	७	१२	४५	पू.भा.	०८	११	५.४२	७.२७	९.०८	३.२६	मीन	पं., र. ०८/११ तक
२८	मं	८	१०	४८	उ.भा. / रे	०७ / ०५	०५ / ३९	५.४३	७.२७	९.०९	३.२६	मेष ०५/३९	सि. ०७/०५ तक, पं. ०५/३९ तक, अ. ०५/३९ से (प्रवेशे वर्ज्यो)
२९	बु	९ / १०	०८ / ०६	३२ / ००	अ	०३	५६	५.४३	७.२७	९.०९	३.२६	मेष	पू. ०३/५६ तक, कु. ०८/३२ से ०३/५६ तक, भ. ०९/१८ से ०६/०० तक
३०	गु	११	०३	१५	भ	०२	०१	५.४४	७.२७	९.१०	३.२६	मेष	यम. ०२/०१ से
१	शु	१२	२४	२५	कृ	२३	५९	५.४४	७.२७	९.१०	३.२६	वृष ०३/३१	यम. २३/५९ से
२	श	१३	२१	३५	रो	२१	५८	५.४५	७.२७	९.११	३.२५	वृष	अ. २१/५८ तक (प्रयाणे वर्ज्यो), भ. २१/३५ से, आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९७वां जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)
३	र	१४	१८	५५	मृ	२०	०७	५.४५	७.२७	९.११	३.२५	मि. ०९/०१	भ. ०८/१३ तक
४	सो	३०	१६	३२	आ	१८	३४	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मिथुन	कु. १८/३४ से, व्या. २०/२२ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
५	मं	१	१४	३८	पुन	१७	२९	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	कर्क ११/४३	कृ. १४/३८ तक, राज. १७/२९ से, सूर्य पुनर्वसु में २२/३६ से व्या. १७/४९ तक
६	बु	२	१३	१९	पु.	१७	००	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	कर्क	राज. १७/०० तक
७	गु	३	१२	४०	आ	१७	१३	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	सिंह १७/१३	र. १७/१३ से, प. २४/३८ से
८	शु	४	१२	४७	म	१८	११	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	सिंह	प. १२/४७ तक, कु. १२/४७ से १८/११ तक, र. १८/११ तक, सि. १८/११ से, व्य. १३/२९ से
९	श	५	१३	३९	पू.फा.	१९	५३	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	क. ०२/२४	र. १९/५३ से, व्य. १३/११ तक
१०	र	६	१५	१०	उ.फा.	२२	११	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	कन्या	र. २२/११ तक, अ. २२/११ से
११	सो	७	१७	१३	ह	२४	५६	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	कन्या	प. १३/१७ से
१२	मं	८	१९	३५	चि	०३	५५	५.४७	७.२६	९.१२	३.२५	तुला १४/२५	प. ०६/२३ तक, र. ०३/५५ से
१३	बु	९	२२	०१	स्वा	०	०	५.४७	७.२६	९.१२	३.२४	तुला	र. अहोरात्र
१४	गु	१०	२४	१६	स्वा	०६	५३	५.४७	७.२५	९.१२	३.२४	वृ. ०२/५८	र. अहोरात्र
१५	शु	११	०२	०९	वि	०९	३७	५.४८	७.२५	९.१२	३.२४	वृश्चिक	कु. और र. ९/३७ तक, प. १३/१५ से ०२/०९ तक, राज. ०२/०९ से
१६	श	१२	०३	३३	अ	११	५७	५.४९	७.२५	९.१३	३.२४	वृश्चिक	सूर्य कर्क में १०/१६ से
१७	र	१३	०४	२४	ज्ये	१३	४६	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	धन १३/४६	र. और सि. १३/४६ से, आचार्य भिक्षु का २९१वां जन्म दिवस एवं २५९वां बोधि दिवस
१८	सो	१४	०४	४१	मू.	१५	०३	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	धन	र. १५/०३ से, प. ०४/४१ से, वै. १७/१४ से
१९	मं	१५	०४	२७	पू.षा.	१५	४९	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	मकर २९/५५	राज. १५/४९ तक, प. १६/३८ तक, सूर्य पुष्य में २२/०९ से, वै. १६/१४ तक, २५७वां तेरापंथ स्थापना दिवस, चातुर्मासिक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२०	बु	१	०३	४६	उ.षा.	१६	०५	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	मकर	कु. १६/०५ से ०३/४६ तक
२१	गु	२	०२	४१	श्र	१५	५५	५.५२	७.२४	९.१५	३.२३	कुंभ ०३/४३	पं.०३/४३ से
२२	शु	३	०१	१८	ध	१५	२५	५.५२	७.२३	९.१५	३.२३	कुंभ	पं., राज. १५/२५ तक, भ. १४/०२ से ०१/१८ तक
२३	श	४	२३	३९	श	१४	३८	५.५३	७.२३	९.१५	३.२३	कुंभ	पं.
२४	र	५	२१	४८	पू.भा.	१३	३८	५.५३	७.२२	९.१५	३.२२	मीन ०७/५४	पं.
२५	सो	६	१९	४६	उ.भा.	१२	२७	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	मीन	पं., र. १२/२७ से, भ. १९/४६ से
२६	मं	७	१७	३८	रे	११	०७	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	मेष ११/०७	भ. ०६/४३ तक, पं. और र० ११/०७ तक, अ. ११/०७ से (प्रवेशे वर्ज्य)
२७	बु	८	१५	३३	अ	०९	४१	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	मेष	मृ. ०९/४१ तक
२८	गु	९	१३	०५	भ	०८	१२	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	वृष १२/४९	यम. ०८/१२ से, भ. २३/५७ से
२९	शु	१०	१०	४८	कृ/रो	०६/०५	४२/५५	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	वृष	कु. और यम. ०६/४२ से ०५/५५ तक, भ. १०/४८ तक
३०	श	११	०८	३६	मृ	०३	५७	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	मि. १६/३५	व्या. १०/५० से
३१	र	१२/१३	०६/०४	३२/४५	आ	०२	५४	५.५७	७.१८	९.१७	३.२०	मिथुन	भ. ०४/४४ से, व्या. ०८/०७ तक
१	सो	१४	०३	१७	पुन	०२	११	५.५७	७.१८	९.१७	३.२०	कर्क २०/१९	भ. १५/५७ तक
२	मं	३०	०२	१७	पु	०१	५४	५.५८	७.१७	९.१८	३.२०	कर्क	सूर्य आश्लेषा में २१/०२ से, व्या. ०१/३६ से, पक्ली

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३	बु	१	०१	४९	आ	०२	०९	५.५९	७.१७	९.१८	३.१९	सिंह ०३/०९	व्य. २४/१० तक
४	गु	२	०१	५७	म	०३	००	५.५९	७.१६	९.१८	३.१९	सिंह	
५	शु	३	०२	४४	पू.फा.	०४	२८	६.००	७.१५	९.१९	३.१९	सिंह	राज. ०२/४४ तक, सि. ०४/२८ तक, र. ०४/२८ से
६	श	४	०४	०६	उ.फा.	०	०	६.०१	७.१४	९.१९	३.१८	क. १०/१६	र. अहोरात्र, भ. १५/२१ से ०४/०६ तक
७	र	५	०६	००	उ.फा.	०६	३०	६.०१	७.१४	९.१९	३.१८	कन्या	र. ०६/३० तक, अ. ०६/३० से
८	सो	६	०	०	ह	०९	०३	६.०२	७.१३	९.२०	३.१८	तुला २२/२७	कु. ०९/०३ तक, र. ०९/०३ से
९	मं	६	०८	१६	चि	११	५४	६.०२	७.१२	९.२०	३.१७	तुला	राज. ०८/१६ से ११/५४ तक, र. ११/५४ तक
१०	बु	७	१०	४०	स्वा	१४	५३	६.०३	७.११	९.२०	३.१७	तुला	भ. १०/४० से २३/५२ तक
११	गु	८	१३	००	वि	१७	४५	६.०३	७.१०	९.२०	३.१७	वृ. ११/०३	र. १७/४५ से
१२	शु	९	१५	०३	अ	२०	१७	६.०४	७.०९	९.२०	३.१६	वृश्चिक	र. अहोरात्र, वै. ०३/१२ से
१३	श	१०	१६	३६	ज्ये	२२	२०	६.०४	७.०९	९.२०	३.१६	धन २२/२०	र. २२/२० तक, भ. ०५/१० से, वै. ०३/१४ तक
१४	र	११	१७	३३	मू	२३	४६	६.०५	७.०७	९.२०	३.१६	धन	सि. २३/४६ तक, भ. १७/३३ तक, राज. २३/४६ से
१५	सो	१२	१७	५०	पू.षा.	२४	३४	६.०५	७.०६	९.२०	३.१५	धन	र. और मृ. २४/३४ से, ७०वां स्वतंत्रता दिवस
१६	मं	१३	१७	२८	उ.षा.	२४	४३	६.०६	७.०५	९.२१	३.१५	म. ०६/४०	र. १८/४१ तक, र. २४/४३ से, सूर्य मघा तथा सिंह में १८/४१ से
१७	बु	१४	१६	२८	श्र	२४	१७	६.०६	७.०४	९.२१	३.१४	मकर	प. १६/२८ से ०३/४६ तक, र. २४/१७ तक, राज. २४/१७ से, पक्की
१८	गु	१५	१४	५७	ध	२३	२२	६.०७	७.०३	९.२१	३.१४	कुंभ ११/५३	प. ११/५३ से रक्षा बंधन

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१९	शु	१	१३	०१	श	२२	०४	६.०७	७.०२	९.२१	३.१४	कुंभ	पं.,
२०	श	२	१०	४६	पू.भा.	२०	३०	६.०७	७.०१	९.२१	३.१३	मीन १४/५५	पं., भ. २१/३३ से
२१	र	३/४	०८/०५	११/४५	उ.भा.	१८	४७	६.०८	७.००	९.२१	३.१३	मीन	पं., राज. ०८/११ तक, भ. ०८/११ तक
२२	सो	५	०३	११	रे	१६	५१	६.०८	७.००	९.२१	३.१३	मेष १६/५१	पं., १६/५१ तक, कु. १६/५१ से
२३	मं	६	२४	४०	अ	१५	१४	६.०९	६.५९	९.२१	३.१३	मेष	अ. १५/१४ तक (प्रवेशे वर्ज्य), कु. १५/१४ तक, र. १५/१४ से, भ. और राज. २४/४० से
२४	बु	७	२२	१९	भ	१३	३५	६.०९	६.५८	९.२१	३.१२	वृष १९/१२	भ. ११/२८ तक, र. और राज. १३/३५ तक, सि. १३/३५ से, ज्वा. २२/१९ से, व्या. २२/४९ से
२५	गु	८	२०	०९	कृ	१२	०७	६.१०	६.५७	९.२२	३.११	वृष	यम. और ज्वा. १२/०७ तक, ज्वा. २२/०९ से, व्या. १९/५८ तक
२६	शु	९	१८	१५	रो	१०	५३	६.११	६.५६	९.२२	३.११	मि. २२/२३	यम. और ज्वा. १०/५३ तक, भ. ०५/२४ से
२७	श	१०	१६	३९	मृ	०९	५७	६.११	६.५५	९.२२	३.११	मिथुन	भ. १६/३९ तक
२८	र	११	१५	२४	आ	०९	२०	६.१२	६.५४	९.२३	३.१०	कर्क ०३/०६	व्या. १२/५४ से
२९	सो	१२	१४	३२	पुन	०९	०५	६.१३	६.५३	९.२३	३.१०	कर्क	व्या. ११/०५ तक, श्रीमज्जयाचार्य का १३५वां निर्वाण दिवस
३०	मं	१३	१४	०५	पु	०९	१५	६.१३	७.५२	९.२३	३.१०	कर्क	भ. १४/०५ से ०२/०२ तक, सूर्य पूर्वाफाल्गुनी में १४/४१ से, पर्युषण पर्व प्रारंभ
३१	बु	१४	१४	०५	आ	०९	५१	६.१४	७.५१	९.२३	३.०९	सिंह ०१/५१	
१	गु	३०	१४	३५	म	१०	५५	६.१४	७.५०	९.२३	३.०९	सिंह	पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घ. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२	शु	१	१५	३४	पू.फा.	१२	२८	६.१४	६.४९	९.२३	३.०९	क. १८/५५	सि. १२/२८ तक
३	श	२	१७	०२	उ.फा.	१४	२९	६.१५	६.४८	९.२३	३.०९	कन्या	मृ. और यम. १४/२९ से
४	र	३	१८	५६	ह	१६	५५	६.१५	६.४७	९.२३	३.०८	तुला ०६/१६	अ. १६/५५ तक, र. १६/५५ से, राज. १६/५५ से १८/५६ तक
५	सो	४	२१	११	चि	१९	४१	६.१५	६.४५	९.२३	३.०८	तुला	भ. ०८/०१ से २१/११ तक, र. १९/४१ तक
६	मं	५	२३	३७	स्वा	२२	३९	६.१६	६.४४	९.२३	३.०७	तुला	र. और कु. २२/३९ से, संवत्सरी महापर्व
७	बु	६	०२	०४	वि	०१	३८	६.१६	६.४३	९.२३	३.०७	वृ. १८/५५	र. और कु. ०१/३८ तक, अ. ०१/३८ से, राज. ०२/०४ से, वै. १०/२० से, कालूगणी का ८०वां स्वर्गवास दिवस
८	गु	७	०४	२०	अ	०४	२७	६.१७	६.४२	९.२३	३.०७	वृश्चिक	भ. ०४/२० से, वै. ११/१३ तक
९	शु	८	०६	१२	ज्ये	०	०	६.१७	६.४१	९.२३	३.०६	वृश्चिक	भ. १७/२० तक
१०	श	९	०	०	ज्ये	०६	५२	६.१८	६.४०	९.२३	३.०६	धन ०६/५२	र. ०६/५२ से, २३वां विकास महोत्सव
११	र	९	०७	३०	मू	०८	४४	६.१८	६.३९	९.२३	३.०५	धन	र. अहोरात्र, सि. ०८/४४ तक
१२	सो	१०	०८	०६	पू.षा.	०९	५६	६.१८	६.३८	९.२३	३.०५	म. १६/०८	र. ०९/५६ तक, मृ. ०९/५६ से, भ. २०/०७ से
१३	मं	११	०७	५७	उ.षा.	१०	२४	६.१८	६.३७	९.२३	३.०५	मकर	भ. ०७/५७ तक, सूर्य उत्तराफाल्गुनी में ०८/२९ से, र. ०८/२९ से १०/२४ तक
१४	बु	१२ १३	०७ ०५	०३ २८	श्र	१०	०७	६.२०	६.३६	९.२४	३.०४	कुंभ २१/४४	पं. २१/४४ से, २१४वां भिक्षु चरमोत्सव दिवस
१५	गु	१४	०३	१६	ध	०९	१०	६.२०	६.३५	९.२४	३.०३	कुंभ	पं., र. ०९/१० से, भ. ०३/१६ से
१६	शु	१५	२४	३५	श पू.भा.	०७ ०५	३९ ४०	६.२१	६.३४	९.२४	३.०३	मीन २४/११	पं., र. ०७/३९ तक, भ. १३/५९ तक, सूर्य कन्या में १८/३७ से, कु. २४/३५ से ०५/४० तक, चन्द्र ग्रहण पचक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१७	श	१	२१	३५	उ.भा.	०३	२३	६.२१	६.३३	९.२४	३.०३	मीन	पं.
१८	र	२	१८	२३	रे	२४	५६	६.२१	६.३२	९.२४	३.०३	मेष २४/५६	पं. २४/५६ तक, भ. ०४/४५ से
१९	सो	३	१५	०८	अ	२२	३०	६.२१	६.३१	९.२४	३.०३	मेष	भ. १५/०८ तक
२०	मं	४	११	५९	भ	२०	१२	६.२२	६.२९	९.२४	३.०२	वृष ०९/४०	ज्वा. ११/५९ से २०/१२ तक, व्या. ०९/०३ से ०५/२९ तक
२१	बु	५/६	०९/०६	०४/२७	कृ	१८	११	६.२२	६.२८	९.२४	३.०२	वृष	सि. १८/११ तक, र. और कु. १८/११ से, भ. ०६/२७ से
२२	गु	७	०४	२१	रो	१६	३३	६.२३	६.२७	९.२४	३.०२	मि. ०३/५४	र. १६/३३ तक, यु. १६/३३ से, भ. १७/२१ तक, व्य. २३/१७ से
२३	शु	८	०२	४३	मृ	१५	२३	६.२३	६.२५	९.२४	३.०१	मिथुन	व्य. २०/४४ तक
२४	श	९	०१	३८	आ	१४	४५	६.२४	६.२३	९.२४	३.००	मिथुन	
२५	र	१०	०१	०५	पुन	१४	३९	६.२५	६.२२	९.२४	२.५९	कर्क ०८/३८	भ. १३/१७ से ०१/०५ तक
२६	सो	११	०१	०५	पु	१५	०५	६.२५	६.२१	९.२४	२.५९	कर्क	सूर्य हस्त में २४/०२ से
२७	मं	१२	०१	३६	आ	१६	०२	६.२६	६.२०	९.२४	२.५८	सिंह १६/०२	
२८	बु	१३	०२	३४	म	१७	२६	६.२६	६.१९	९.२४	२.५८	सिंह	भ. ०२/३४ से
२९	गु	१४	०३	५७	पू.फा.	१९	१६	६.२६	६.१८	९.२४	२.५८	क. ०९/४७	भ. १५/१३ तक
३०	शु	३०	०५	४३	उ.फा.	२१	२८	६.२७	६.१७	९.२४	२.५८	कन्या	कु. ०५/४३ से पक्की

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१	श	१	०	०	ह	२३	५९	६.२७	६.१६	९.२४	२.४७	कन्या	मृ. और यम. २३/५९ तक
२	र	१	०७	४७	चि	०२	४५	६.२८	६.१५	९.२५	२.४७	तुला १३/२१	राज. ०७/४७ से ०२/४५ तक, वै. १५/३६ से
३	सो	२	१०	०७	स्वा	०४	४२	६.२९	६.१३	९.२५	२.४६	तुला	र. और यम. ०५/४२ से, वै. १६/२५ तक
४	मं	३	१२	३६	वि	०	०	६.२९	६.१२	९.२५	२.४६	वृ. ०१/५१	र. अहोरात्र, भ. ०१/५२ से
५	बु	४	१५	०७	वि	०८	४४	६.२९	६.११	९.२५	२.४५	वृश्चिक	र. ०८/४४ तक, अ. ०८/४४ से, भ. १५/०७ तक
६	गु	५	१७	३३	अ	११	४२	६.३०	६.१०	९.२५	२.४५	वृश्चिक	र. ११/४२ से
७	शु	६	१९	४२	ज्ये	१४	२६	६.३०	६.०९	९.२५	२.४५	धन १४/२६	र. १४/२६ तक, कु. १४/२६ से १९/४२ तक
८	श	७	२१	२५	मू	१६	४७	६.३०	६.०८	९.२५	२.४४	धन	भ. २१/२५ से
९	र	८	२२	३१	पू.षा.	१८	३५	६.३१	६.०७	९.२५	२.४४	म. ३४/५५	भ. १०/०३ तक, र. १८/३५ से
१०	सो	९	२२	५३	उ.षा.	१९	४०	६.३१	६.०६	९.२५	२.४४	मकर	मृ. १९/४० तक, र. १२/५६ तक, पुन: १९/४० से सूर्य चित्रा में १२/५६ से, सि. १९/४० से, कु. २२/५३ से
११	मं	१०	२२	२८	श्र	२०	००	६.३२	६.०५	९.२५	२.४३	मकर	र. अहोरात्र, कु. २०/०० तक
१२	बु	११	२१	१४	ध	१९	३२	६.३२	६.०४	९.२५	२.४३	कुंभ ०७/५२	पं. ७/५२ से, भ. ०९/५७ से २१/१४ तक, र. १९/३२ तक
१३	गु	१२	१९	१६	श	१८	१९	६.३३	६.०३	९.२५	२.४२	कुंभ	पं.
१४	शु	१३	१६	३७	पू.भा.	१६	२६	६.३३	६.०२	९.२५	२.४२	मीन १०/५७	पं., र. १६/२६ से, व्या. ०६/३१ से
१५	श	१४	१३	२६	उ.भा.	१४	०१	६.३४	६.०१	९.२६	२.४२	मीन	पं., भ. १३/२६ से २३/४२ तक, र. १४/०१ तक, व्या. ०२/३१ तक [illegible]
१६	र	१५ / १	०९ / ०६	५४ / १०	रे	११	१५	६.३५	५.५९	९.२६	२.४१	मेष ११/१५	पं. ११/१५ तक, सूर्य तुला में ०६/३२ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१७	सो	२	०२	२५	अ/भ	०८/०५	१७/२०	६.३५	५.५८	९.२६	२.५०	मेष	
१८	मं	३	२२	५०	कृ	०२	३४	६.३६	५.५७	९.२६	२.५०	वृष १०/३७	भ. १२/३६ से २२/५० तक, व्य. १३/५२ से
१९	बु	४	१९	३४	रो	२४	१०	६.३७	५.५६	९.२७	२.१९	वृष	कु. १९/३४ से २४/१० तक, व्य. ०९/५३ तक
२०	गु	५	१६	४८	मृ	२२	१७	६.३७	५.५५	९.२७	२.४९	मि. ११/०१	मृ. २२/१७ तक, र. २२/१७ से
२१	शु	६	१४	४०	आ	२१	०२	६.३८	५.५४	९.२७	२.४९	मिथुन	भ. १४/४० से ०१/५१ तक, र. २१/०२ तक
२२	श	७	१३	१३	पुन	२०	२९	६.३८	५.५३	९.२७	२.४९	कर्क १४/३३	
२३	र	८	१२	३१	पु	२०	४०	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	कर्क	सूर्य स्वाति में २३/३० से, गाजबीज की अस्वाध्याय प्रारम्भ
२४	सो	९	१२	३३	आ	२१	३४	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	सिंह २१/३४	ज्वा. १२/३३ से २१/३४ तक, कु. २१/३४ से, भ. २४/४९ से
२५	मं	१०	१३	१५	म	२३	०५	६.४०	५.५१	९.२८	२.४८	सिंह	भ. १३/१५ तक, कु. २३/०५ तक
२६	बु	११	१४	३२	पू.फा.	०१	०६	६.४१	५.५१	९.२८	२.४७	सिंह	राज. १४/३२ से ०१/०६ तक
२७	गु	१२	१६	१७	उ.फा.	०२	३०	६.४१	५.४९	९.२८	२.४७	क. ०७/४०	वै. १९/५३ से
२८	शु	१३	१८	२२	ह	०६	१२	६.४२	५.४८	९.२८	२.४६	कन्या	भ. १८/२२ से, वै. २०/२६ तक, धन तेरस
२९	श	१४	२०	४२	चि	०	०	६.४३	५.४८	९.२९	२.४६	तुला ११/३७	भ. ०७/३१ तक
३०	र	३०	२३	०९	चि	०९	०४	६.४४	५.४७	९.३०	२.४६	तुला	दीपावली, भगवान महावीर का २५४३वां निर्वाण कल्याणक दिवस पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घ. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३१	सो	१	०१	४१	स्वा	१२	०२	६.४५	५.४६	९.३०	२.४५	तुला	कु. १२/०२ से ०१/४१ तक, यम. १२/०२ से, श्री वीर निर्वाण सं. २५४३
१	मं	२	०४	१२	वि	१५	०१	६.४५	५.४६	९.३०	२.४५	वृ. ०८/१६	राज. १५/०१ से, आचार्यश्री तुलसी का १०३वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)
२	बु	३	०६	३८	अ	१७	५८	६.४५	५.४५	९.३०	२.४५	वृश्चिक	अ. और राज. १७/५८ तक, र. १७/५८ से
३	गु	४	०	०	ज्ये	२०	४७	६.४६	५.४४	९.३०	२.४४	धन २०/४७	भ. १९/४७ से, र. २०/४७ तक
४	शु	४	०८	५३	मू	२३	२१	६.४६	५.४३	९.३०	२.४४	धन	भ. ०८/५३ तक, कु. ०८/५३ से २३/२१ तक, र. २३/२१ से
५	श	५	१०	४८	पू.षा.	०१	३३	६.४७	५.४३	९.३१	२.४४	धन	र. ०१/३३ तक
६	र	६	१२	१७	उ.षा	०३	१५	६.४८	५.४२	९.३२	२.४३	म. ०८/०३	सूर्य विशाखा में ०७/३३ से, र. ०७/३३ से ०३/१५ तक
७	सो	७	१३	१०	श्र	०४	१८	६.४९	५.४१	९.३२	२.४३	मकर	सि. ०४/१८ तक, भ. १३/१० से ०१/२१ तक
८	मं	८	१३	२१	ध	०४	३७	६.५०	५.४०	९.३३	२.४२	कुंभ १६/३४	पं. १६/३४ से, र. और मृ. ०४/३७ से
९	बु	९	१२	४५	श	०४	१०	६.५१	५.४०	९.३३	२.४२	कुंभ	पं., र. अहोरात्र, कु. ०४/१० से, व्या. २१/५२ से
१०	गु	१०	११	२१	पू.भा.	०२	५६	६.५१	५.३९	९.३३	२.४२	मीन २१/१८	पं., भ. २२/२२ से, र. ०२/५६ तक, व्या. १९/१९ तक
११	शु	११ १२	०९ ०६	१३ २४	उ.भा.	०१	००	६.५२	५.३९	९.३४	२.४२	मीन	पं., भ. ०९/१३ तक, राज. ०९/१३ से ०१/०० तक, अ. ०१/०० से
१२	श	१३	०३	०२	रे	२२	३१	६.५३	५.३९	९.३४	२.४१	मेष २२/३१	पं. २२/३१ तक, र. २२/३१ से
१३	र	१४	२३	१८	अ	१९	३६	६.५३	५.३८	९.३४	२.४१	मेष	र. १९/३६ तक, भ. और राज. २३/१८ से, व्य. ०८/२९ से ०४/०८ तक
१४	सो	१५	१९	२३	भ	१६	२८	६.५४	५.३७	९.३५	२.४१	वृष २९/४०	भ. ०९/२२ तक, चातुर्मासिक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घ. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१५	मं	१	१५	२८	कृ	१३	१८	६.५५	५.३७	९.३६	२.४०	वृष	कृ. १३/१८ से १५/२८ तक, सूर्य वृश्चिक में ०६/१८ से
१६	बु	२	११	४५	रो	१०	१९	६.५६	५.३६	९.३६	२.४०	मि. २०/५८	राज. १०/१९ से, भ. २२/०१ से
१७	गु	३/४	०८/०५	२५/३७	मृ/आ	०७/०५	४३/३९	६.५६	५.३५	९.३६	२.४०	मिथुन	मृ. ०७/४३ तक, भ. ०८/२५ तक, सि. ०५/३९ से
१८	शु	५	०३	३४	पुन	०४	१८	६.५७	५.३४	९.३६	२.३९	कर्क २२/३५	कु. और र. ०४/१८ से
१९	श	६	०२	२०	पु	०३	४६	६.५८	५.३४	९.३७	२.३९	कर्क	सूर्य अनुराधा में १३/४० से, र. १३/४० तक, भ. ०२/२० से, र. ०३/४६ से
२०	र	७	०१	५८	आ	०४	०४	६.५९	५.३४	९.३८	२.३९	सिंह ०४/०४	भ. १४/०३ तक, र. ०४/०४ तक, यम. ०४/०४ से
२१	सो	८	०२	२५	म	०५	१०	७.००	५.३४	९.३९	२.३८	सिंह	वै. २४/२९ से
२२	मं	९	०२	३८	पू.फा.	०	०	७.०१	५.३४	९.३९	२.३८	सिंह	वै. २४/१३ तक
२३	बु	१०	०५	२७	पू.फा.	०६	५९	७.०२	५.३४	९.४०	२.३८	क. १३/३३	भ. १६/२९ से ०५/२७तक, भगवान महावीर का २५८५वां दीक्षा कल्याणक दिवस
२४	गु	११	०	०	उ.फा.	०९	२२	७.०३	५.३४	९.४१	२.३८	कन्या	
२५	शु	११	०७	४३	ह	१२	०७	७.०४	५.३४	९.४१	२.३७	तुला ०९/३५	कु. ०७/४३ तक, राज. १२/०७ से
२६	श	१२	१०	१३	चि	१५	०५	७.०५	५.३३	९.४२	२.३७	तुला	सि. १५/०५ से
२७	र	१३	१२	४८	स्वा	१८	०६	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	तुला	भ. १२/४८ से ०२/०६ तक
२८	सो	१४	१५	२२	वि	२१	०५	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	वृ. १४/२१	यम. २१/०५ तक
२९	मं	३०	१७	४९	अ	२३	५६	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	वृश्चिक	पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३०	बु	१	२०	०६	ज्ये	०२	३८	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	धन ०२/३८	यम. ०२/३८ से
१	गु	२	२२	१०	मू	०५	०६	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	धन	र. ०५/०६ से
२	शु	३	२३	५८	पू.षा.	०	०	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	धन	राज. २३/५८ तक, सूर्य ज्येष्ठा में १७/५४ से, र. १७/५४ तक
३	श	४	०१	२५	पू.षा.	०७	१७	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	म. १३/४७	र. ०७/१७ से, भ. १२/४४ से ०१/२५ तक
४	र	५	०२	२७	उ.षा.	०९	०८	७.०९	५.३४	९.४५	२.३६	मकर	र. ०९/०८ तक, व्या. ०५/४७ से
५	सो	६	०२	५७	श्र	१०	३२	७.१०	५.३४	९.४६	२.३६	कुंभ २३/०३	कु. और सि. १०/३२ तक, र. १०/३२ से, पं. २३/०३ से, व्या. ०४/५६ तक
६	मं	७	०२	५१	ध	११	२५	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	कुंभ	पं., राज. और र. ११/२५ तक, मृ. ११/२५ से, भ. ०२/५१ से
७	बु	८	०२	०५	श	११	४१	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	मीन २१/२८	पं., भ. १४/३३ तक
८	गु	९	२४	३६	पू.भा.	११	१७	७.१२	५.३४	९.४८	२.३५	मीन	पं., र. ११/१७ से, व्या. २३/२६ से
९	शु	१०	२२	२८	उ.भा.	१०	१२	७.१३	५.३४	९.४८	२.३५	मीन	पं., र. अहोरात्र, अ. १०/१२ से, व्या. २०/३० तक
१०	श	११	१९	४५	रे / अ	०८ / ०६	२९ / ११	७.१४	५.३४	९.४९	२.३५	मेष ०८/२९	पं. और र. ०८/२९ तक, भ. ०९/११ से १९/४५ तक
११	र	१२	१६	३३	भ	०३	३४	७.१५	५.३४	९.५०	२.३५	मेष	राज. १६/३३ तक, र. ०३/३४ से
१२	सो	१३	१३	००	कृ	२४	४०	७.१६	५.३५	९.५०	२.३५	वृष ०८/५२	र. २४/४० तक
१३	मं	१४ / १५	०९ / ०५	१८ / ३७	रो	२१	४२	७.१६	५.३५	९.५१	२.३५	वृष	भ. ०९/१८ से १९/२६ तक, राज. २१/४२ से ०५/३७ तक पक्की

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घ. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१४	बु	१	०२	१०	मृ	१८	५३	७.१७	५.३५	९.५२	२.३४	मि. ०८/१६	
१५	गु	२	२३	०७	आ	१६	२४	७.१८	५.३५	९.५२	२.३४	मिथुन	सि. १६/२४ से, सूर्य मूल और धन में २०/५६ से, मलमास प्रारंभ
१६	शु	३	२०	३८	पुन	१४	२७	७.१८	५.३६	९.५२	२.३४	कर्क ०८/१३	भ. ०९/४८ से २०/३८ तक, राज. १४/२७ से २०/३८ तक
१७	श	४	१८	५३	पु	१३	११	७.१९	५.३६	९.५३	२.३४	कर्क	वै. १०/२७ से
१८	र	५	१७	५८	आ	१२	४३	७.१९	५.३७	९.५४	२.३४	सिंह १२/४३	यम. १२/४३ से, वै. ०८/१२ तक
१९	सो	६	१७	५६	म	१३	०५	७.२०	५.३७	९.५४	२.३४	सिंह	कु. १३/०५ तक, र. १३/०५ से, भ. १७/५६ से ०६/१५ तक
२०	मं	७	१८	४५	पू.फा.	१४	१७	७.२०	५.३७	९.५४	२.३४	क. २०/४२	राज और र. १४/१७ तक
२१	बु	८	२०	१९	उ.फा.	१६	१३	७.२१	५.३८	९.५५	२.३४	कन्या	
२२	गु	९	२२	२७	ह	१८	४३	७.२१	५.३८	९.५५	२.३४	कन्या	
२३	शु	१०	२४	५६	चि	२१	३६	७.२२	५.३९	९.५६	२.३४	तुला ०८/०८	भ. ११/४० से २४/५६ तक, भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस
२४	श	११	०३	३३	स्वा	२४	३८	७.२२	५.३९	९.५६	२.३४	तुला	सि. २४/३८ तक
२५	र	१२	०६	०८	वि	०३	३८	७.२३	५.४०	९.५७	२.३४	वृ. २०/५३	राज. ०३/३८ से ०६/०८ तक, मृ. ०३/३८ से
२६	सो	१३	०	०	अ	०६	२८	७.२३	५.४०	९.५७	२.३४	वृश्चिक	
२७	मं	१३	०८	३१	ज्ये	०	०	७.२४	५.४१	९.५८	२.३४	वृश्चिक	भ. ०८/३१ से २१/३७ तक
२८	बु	१४	१०	३७	ज्ये	०९	०२	७.२४	५.४१	९.५८	२.३४	धन ०९/०२	यम. ०९/०२ से, सूर्य पूर्वाषाढ़ा में २३/०९ से, पक्खी
२९	गु	३०	१२	२४	मू	११	१८	७.२५	५.४२	९.५९	२.३४	धन	

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घ. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३०	शु	१	१३	४९	पू.षा.	१३	१३	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	म. १९/३९	व्या. १०/२१ से
३१	श	२	१४	५३	उ.षा.	१४	४८	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	मकर	व्या. १०/०२ तक
१	र	३	१५	३४	श्र	१६	०२	७.२५	५.४४	१०.००	२.३५	कुंभ ०४/३०	र. १६/०२ से, भ. ०३/४६ से, पं. ०४/३० से
२	सो	४	१५	५२	ध	१६	५२	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	कुंभ	पं., भ. १५/५२ तक, र. १६/५२ तक
३	मं	५	१५	४३	श	१७	१८	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	कुंभ	पं., मृ. १७/१८ तक, र. और कु. १७/१८ से
४	बु	६	१५	०७	पू.भा.	१७	१६	७.२७	५.४६	१०.०२	२.३५	मीन १९/१८	पं., कु. १५/०७ तक, र. १७/१६ तक, राज. १७/१६ से
५	गु	७	१४	०१	उ.भा.	१६	४६	७.२७	५.४७	१०.०२	२.३५	मीन	पं., भ. १४/०१ से ०१/१७ तक
६	शु	८	१२	२६	रे	१५	४६	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	मेष १५/४६	अ. और पं. १५/४६ तक, र. १५/४६ से
७	श	९	१०	२२	अ	१४	१९	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	मेष	र. अहोरात्र
८	र	१०/११	०७/०५	५३/०४	भ	१२	२७	७.२७	५.४९	१०.०२	२.३५	वृष १७/१७	र. १२/२७ तक, भ. १८/३१ से ०५/०४ तक
९	सो	१२	०२	०२	कृ	१०	१७	७.२७	५.५०	१०.०३	२.३६	वृष	
१०	मं	१३	२२	५६	रो/मृ	०७/०५	५७/३४	७.२७	५.५१	१०.०३	२.३६	मि. १८/४५	र. ०७/५७ से ०१/०७ तक, र. और यम. ०५/३४ से, सूर्य उत्तराषाढा में ०१/०७ से
११	बु	१४	१९	५३	आ	०३	१९	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	मिथुन	भ. १९/५३ से ०६/२६ तक, र. ०३/१९ तक, वै. ०१/३८ से
१२	गु	१५	१७	०५	पुन	०१	२२	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	कर्क १९/४९	गुरुपुष्यामृतयोग ०१/२२ से (विवाहे वर्ज्य) सि. ०१/२२ तक, वै. २२/११ तक पक्वली

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घ. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१३	शु	१	१४	४२	पु	२३	५२	७.२७	५.५३	१०.०३	२.३६	कर्क	राज. १४/४२ से २३/५२ तक, मृ. २३/५२ से
१४	श	२	१२	५२	आ	२२	५८	७.२७	५.५४	१०.०४	२.३७	सिंह २२/५८	सूर्य मकर में ०७/४० से, भ. २४/१२ से, मलमास समाप्त
१५	र	३	११	४२	म	२२	४६	७.२७	५.५५	१०.०४	२.३७	सिंह	यम. २२/४६ तक, भ. ११/४२ तक
१६	सो	४	११	१८	पू.फा.	२३	२०	७.२७	५.५६	१०.०४	२.३७	क. ०५/३४	
१७	मं	५	११	४२	उ.फा.	२४	३९	७.२७	५.५७	१०.०५	२.३८	कन्या	र. और कु. २४/३९ से
१८	बु	६	१२	५१	ह	०२	४०	७.२७	५.५८	१०.०५	२.३८	कन्या	कु. १२/५१ तक, भ. १२/५१ से ०१/४१ तक, र. ०२/४० तक, राज. ०२/४० से
१९	गु	७	१४	३९	चि	०५	१२	७.२७	५.५९	१०.०५	२.३८	तुला १५/२२	
२०	शु	८	१६	५६	स्वा	०	०	७.२६	५.५९	१०.०५	२.३८	तुला	
२१	श	९	१९	२८	स्वा	०८	०५	७.२५	६.००	१०.०४	२.३९	वृ. ०४/११	सि. ०८/०५ तक
२२	र	१०	२२	०१	वि	११	०४	७.२४	६.००	१०.०३	२.३९	वृश्चिक	भ. ०८/४५ से २२/०१ तक, मृ. ११/०४ से
२३	सो	११	२४	२२	अ	१३	५७	७.२४	६.०१	१०.०३	२.३९	वृश्चिक	सूर्य श्रवण में ०३/२८ से
२४	मं	१२	०२	२३	ज्ये	१६	३४	७.२४	६.०२	१०.०३	२.३९	धन १६/३४	व्या. १५/३४ से
२५	बु	१३	०३	५८	मू	१८	४७	७.२४	६.०३	१०.०३	२.४०	धन	यम. १८/४७ तक, भ. ०३/५८ से, व्या. १५/४७ तक
२६	गु	१४	०५	०३	पू.षा.	२०	३३	७.२३	६.०३	१०.०३	२.४१	म. ०२/५५	भ. १६/३४ तक, ६७वां गणतंत्र दिवस
२७	शु	३०	०५	३८	उ.षा.	२१	५०	७.२२	६.०४	१०.०३	२.४१	मकर	कु. ०५/३८ से, पञ्चकी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२८	श	१	०५	४५	श्र	२२	३९	७.२२	६.०५	१०.०३	२.४१	मकर	व्य. १४/१८ से
२९	र	२	०५	२७	ध	२३	०४	७.२२	६.०६	१०.०३	२.४१	कुंभ १०/५५	राज. २३/०४ तक, पं. १०/५५ से, व्य. १३/०४ तक
३०	सो	३	०४	४५	श	२३	०५	७.२२	६.०७	१०.०३	२.४१	कुंभ	पं., र. २३/०५ से
३१	मं	४	०३	४२	पू.भा.	२२	४५	७.२२	६.०८	१०.०३	२.४१	मीन १६/४२	पं., भ. १६/१६ से ०३/४२ तक, र. २२/४५ तक, सि. २२/४५ से
१	बु	५	०२	२१	उ.भा.	२२	०७	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	मीन	पं., र. २२/०७, बसंत पंचमी
२	गु	६	२४	४३	रे	२१	१२	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	मेष २१/१२	पं. और र. २१/१२ तक
३	शु	७	२२	५१	अ	२०	०२	७.२१	६.१०	१०.०३	२.४२	मेष	राज. २०/०२ से २२/५१ तक, भ. २२/५१ से, १५३वां मर्यादा महोत्सव
४	श	८	२०	४६	भ	१८	४०	७.२१	६.११	१०.०३	२.४२	वृष २४/१८	भ. ०९/५० तक, र. १८/४० से, ज्वा. १८/४० से २०/४६ तक
५	र	९	१८	३१	कृ	१७	०८	७.२०	६.१२	१०.०३	२.४४	वृष	र. अहोरात्र, ज्वा. १७/०८ से १८/३१ तक, सूर्य धनिष्ठा में ०६/३३ से
६	सो	१०	१६	११	रो	१५	३०	७.१९	६.१३	१०.०३	२.४४	मि. ०३/४०	र. अहोरात्र, कु. १५/३० तक, अ. १५/३० से, भ. ०३/०० से, वै. १४/५५ से
७	मं	११	१३	४९	मृ	१३	५०	७.१९	६.१४	१०.०३	२.४४	मिथुन	भ. १३/४९ तक, राज. १३/४९ से १३/५० तक, र. १३/५० तक, यम. १३/५० से, वै. ११/४६ तक
८	बु	१२	११	३१	आ	१२	१५	७.१८	६.१५	१०.०२	२.४४	कर्क ०२/०९	
९	गु	१३	०९	२४	पुन	१०	५०	७.१७	६.१६	१०.०२	२.४५	कर्क	सि. १०/५० तक, र. १०/५० से, गुरुपुष्यामृतयोग १०/५० से (विवाहे वर्ज्य)
१०	शु	१४ / १५	०४ / ०६	३२ / ०४	पु	०९	४१	७.१६	६.१७	१०.०१	२.४५	कर्क	राज. ०७/३२ से ०९/४१ तक, र. ०९/४१ तक, भ. ०७/३२ से १८/४५ तक, मृ. ०९/४१ से, चन्द्र ग्रहण पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घ. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
११	श	१	०५	०६	आ	०८	५६	७.१५	६.१७	१०.००	२.४६	सिंह ०८/५६	
१२	र	२	०४	४३	म	०८	४१	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	सिंह	यम. ०८/४१ तक, राज. ०८/४१ से, सूर्य कुंभ में २०/४० से
१३	सो	३	०४	५८	पू.फा.	०९	०१	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	क. १५/१२	भ. १६/४६ से ०४/५८ तक
१४	मं	४	०५	५३	उ.फा.	०९	५९	७.१३	६.१९	९.५९	२.४७	कन्या	कु. ०५/५३ से
१५	बु	५	०	०	ह	११	३४	७.१२	६.२०	९.५९	२.४७	तुला २४/३५	कु. १३/४३ तक
१६	गु	५	०७	२५	चि	१३	४३	७.१२	६.२१	९.५९	२.४७	तुला	र. १३/४३ से
१७	शु	६	०९	२७	स्वा	१६	१९	७.११	६.२१	९.५९	२.४८	तुला	भ. ०९/२७ से २२/३७ तक, र. १६/१९ तक
१८	श	७	११	५०	वि	१९	११	७.१०	६.२२	९.५८	२.४८	वृ. १२/२८	व्या. २०/२७ से
१९	र	८	१४	१९	अ	२२	०७	७.१०	६.२३	९.५८	२.४८	वृश्चिक	मृ. २२/०७ तक, सूर्य शतभिषा में ११/०९ से, व्या. २१/१६ तक
२०	सो	९	१६	४२	ज्ये	२४	५३	७.०९	६.२३	९.५७	२.४८	धन २४/५३	कु. २४/५३ से, भ. ०५/४८ से
२१	मं	१०	१८	४६	मू	०३	१८	७.०८	६.२४	९.५७	२.४९	धन	भ. १८/४६ तक, कु. ०३/१८ तक
२२	बु	११	२०	२१	पू.षा.	०५	१२	७.०७	६.२४	९.५६	२.४९	धन	राज. २०/२१ से ०५/१२ तक, व्य. २२/२८ से
२३	गु	१२	२१	१९	उ.षा.	०६	३०	७.०६	६.२५	९.५६	२.५०	म. ११/३४	व्य. २२/०३ तक
२४	शु	१३	२१	३९	श्र	०	०	७.०५	६.२५	९.५५	२.५०	मकर	भ. २१/३९ से
२५	श	१४	२१	२१	श्र	०७	११	७.०४	६.२६	९.५४	२.५१	कुंभ १९/१८	भ. ०९/३४ तक, प. १९/१८ से पक्षवी
२६	र	३०	२०	२९	ध / श	०३ / ०६	१७ / ५०	७.०३	६.२७	९.५४	२.५२	कुंभ	पं.

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२७	सो	१	१९	०७	पू.भा.	०५	५८	७.०२	६.२७	९.५३	२.५२	मीन २४/१२	पं., कु. १९/०७ तक
२८	मं	२	१७	२२	उ.भा.	०४	४४	७.०१	६.२८	९.५३	२.५२	मीन	पं., राज. और सि. ०४/४४ तक, र. ०४/४४ से
१	बु	३	१५	१९	रे	०३	१७	६.५९	६.२९	९.५२	२.५३	मेष ०३/१७	भ. ०२/१२ से, पं. और र. ०३/१७ तक, मृ. ०३/१७ से
२	गु	४	१३	०४	अ	०१	४२	७.५८	६.३०	९.५१	२.५३	मेष	भ. १३/०४ तक, र. और ज्वा. ०१/४२ से
३	शु	५	१०	४५	भ	२४	०५	७.५७	६.३०	९.५०	२.५३	वृष ०५/५५	ज्वा. १०/४५ तक, र. २४/०५ तक, वै. ०१/१४ से
४	श	६ / ७	०८ / ०६	२१ / ०९	कृ	२२	३०	७.५६	६.३०	९.५०	२.५३	वृष	सूर्य पूर्वाभाद्रपदा में १७/२३ से, र. १७/२३ से २२/३० तक, अ. २२/३० से (प्रयाणे वर्ज्य), भ. ०६/०९ से, वै. २२/१० तक
५	र	८	०४	०१	रो	२१	०२	७.५५	६.३१	९.४९	२.५४	वृष	भ. १७/०४ तक
६	सो	९	०२	०४	मृ	१९	४४	७.५४	६.३१	९.४८	२.५४	मि. ०८/२२	अ. १९/४४ तक, र. १९/४४ से
७	मं	१०	२४	२०	आ	१८	३८	७.५३	६.३२	९.४८	२.५५	मिथुन	र. अहोरात्र, यम. १८/३८ तक, कु. १८/३८ से
८	बु	११	२२	५१	पुन	१७	४७	७.५२	६.३३	९.४७	२.५५	कर्क ११/५८	भ. ११/३३ से २२/५१ तक, र. और कु. १७/४७ तक, राज. २२/५१ से
९	गु	१२	२१	४१	पु	१७	१३	७.५१	६.३४	९.४७	२.५६	कर्क	गुरुपुष्यामृतयोग १७/१३ तक (विवाहे वर्ज्य)
१०	शु	१३	२०	५२	आ	१७	००	७.५०	६.३४	९.४६	२.५६	सिंह १७/००	मृ. १७/०० तक, र. १७/०० से
११	श	१४	२०	२६	म	१७	०८	७.४९	६.३४	९.४५	२.५६	सिंह	र. १७/०८ तक, भ. २०/२६ से
१२	र	१५	२०	२६	पू.फा.	१७	४२	७.४८	६.३५	९.४५	२.५७	क. २३/५६	राज. १७/४२ तक, भ. ०८/२२ तक, होलिका, चातुर्मासिक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घ. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१३	सो	१	२०	५४	उ.फा.	१८	४४	६.४७	६.३५	९.४४	२.५७	कन्या	कु. १८/४४ से २०/५४ तक, धुलेटी
१४	मं	२	२१	५२	ह	२०	१४	६.४६	६.३६	९.४४	२.५७	कन्या	सूर्य मीन में १७/३४ से, राज. २०/१४ से, मलमास प्रारंभ
१५	बु	३	२३	१९	चि	२२	१२	६.४५	६.३७	९.४३	२.५७	तुला ०९/१०	भ. १०/३२ से २३/१९ तक, राज. २२/१२ तक, व्या. ०२/०४ से
१६	गु	४	०१	१३	स्वा	२४	३६	६.४४	६.३८	९.४२	२.५८	तुला	व्या. ०२/३२ तक
१७	शु	५	०३	२८	वि	०३	२०	६.४३	६.३९	९.४२	२.५९	वृ. २०/३८	कु. ०३/२० तक, सूर्य उत्तराभाद्रपदा में ०१/५५ से
१८	श	६	०५	५४	अ	०६	१५	६.४२	६.३९	९.४१	२.५९	वृश्चिक	भ. ०५/५४ से, र. ०६/१५ से
१९	र	७	०	०	ज्ये	०	०	६.४१	६.३९	६.४०	६.५९	वृश्चिक	र. अहोरात्र, भ. १९/०८ तक, व्य. ०४/५६ से
२०	सो	७	०८	२०	ज्ये	०९	१०	६.४०	६.३९	९.४०	३.००	धन ०९/१०	र. ०९/१० तक, व्य. ०५/३७ तक
२१	मं	८	१०	३२	मू	११	५१	६.३९	६.४०	९.३९	३.००	धन	भगवान ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस, वर्षीतप प्रारंभ
२२	बु	९	१२	१८	पू.षा.	१४	०७	६.३८	६.४१	९.३९	३.०१	म. २०/३६	भ. २४/५८ से
२३	गु	१०	१३	२८	उ.षा.	१५	४८	६.३६	६.४१	९.३७	३.०१	मकर	भ. १३/२८ तक
२४	शु	११	१३	५४	श्र	१६	४६	६.३५	६.४२	९.३७	३.०२	कुंभ ०४/५८	कु. १३/५४ तक, राज. १६/४६ से, पं. ०४/५८ से
२५	श	१२	१३	३४	ध	१६	५९	६.३३	६.४३	९.३६	३.०३	कुंभ	पं.
२६	र	१३	१२	२९	श	१६	२९	६.३२	६.४३	९.३५	३.०३	कुंभ	पं., भ. १२/२९ से २३/४१ तक
२७	सो	१४	१०	४५	पू.भा.	१५	२०	६.३१	६.४४	९.३४	३.०३	मीन ०१/४०	पं., पक्खी
२८	मं	३०/१	०८/०५	२८/४६	उ.भा.	१३	४१	६.३०	६.४४	९.३४	३.०३	मीन	पं., सि. १३/४१ तक

		कोलकाता		दिल्ली		मुम्बई		चेन्नई		बैंगलोर		जोधपुर	
महीना		सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
जनवरी	१	६.१७	५.०३	७.१४	५.३५	७.१२	६.१२	६.२९	५.५४	६.४२	६.०४	७.२८	५.५२
	१५	६.१९	५.१२	७.१५	५.४६	७.१५	६.२१	६.३४	६.०३	६.४६	६.१२	७.३१	६.०१
फरवरी	१	६.१६	५.२४	७.१०	६.००	७.१३	६.३१	६.३८	६.२१	६.४७	६.२१	७.२६	६.१५
	१५	६.०९	५.३२	७.००	६.११	७.०८	६.३८	६.३०	६.१६	६.४३	६.२५	७.२७	६.२५
मार्च	१	५.५८	५.४०	६.४७	६.२०	६:५८	६.४४	६.२४	६.१८	६.३६	६.२८	७.०५	६.३३
	१५	५.४६	५.४६	६.३२	६.२९	६.४८	६.४८	६.१६	६.२०	६.२७	६.३१	६.५१	६.४१
अप्रैल	१	५.३०	५.५२	६.१२	६.३९	६.३३	६.५२	६.०५	६.२१	६.१७	६.३१	६.३४	६.५०
	१५	५.१७	५.५७	५.५६	६.४७	६.२२	६.५६	५.५७	६.२२	६.०८	६.३२	६.१९	६.५६
मई	१	५.०४	६.०३	५.४१	६.५६	६.११	७.०२	५.४९	६.२४	५.५९	६.३५	६.०४	७.०५
	१५	४.५७	६.०९	५.३१	७.०४	६.०५	७.०६	५.४५	६.२८	५.५४	६.३८	५.५५	७.१२
जून	१	४.५२	६.१७	५.२४	७.१४	६.०१	७.१२	५.४३	६.३२	५.५२	६.४२	५.४९	७.२०
	१५	४.५२	६.२२	५.२३	७.२०	६.०१	७.१७	५.४५	६.३७	५.५३	६.४७	५.४८	७.२६
जुलाई	१	४.५५	६.२५	५.२७	७.२३	६.०५	७.२०	५.४८	६.३९	५.५८	६.५०	५.५१	७.२९
	१५	५.०१	६.२४	५.३३	७.२१	६.१०	७.१९	५.५२	६.३९	६.०१	६.५०	५.५८	७.२७
अगस्त	१	५.०८	६.१७	५.४२	७.१२	६.१६	७.१४	५.५५	६.३६	६.०५	६.४७	६.०५	७.२१
	१५	५.१३	६.०८	५.५०	७.०१	६.२०	७.०६	५.५८	६.२९	६.०८	६.४०	६.१३	७.११
सितम्बर	१	५.१९	५.५४	५.५९	६.४३	६.२४	६.५३	५.५९	६.१९	६.०९	६.३१	६.१९	६.५५
	१५	५.२३	५.४०	६.०६	६.२६	६.२६	६.४१	५.५८	६.०९	६.०९	६.२१	६.२४	६.४०
अक्टूबर	१	५.२८	५.२४	६.१४	६.०७	६.२९	६.२७	५.५८	५.५८	६.१०	६.१०	६.३३	६.२२
	१५	५.३३	५.१२	६.२२	५.५२	६.३३	६.१६	५.५९	५.४९	६.११	६.०१	६.४०	६.०७
नवम्बर	१	५.४२	४.५९	६.३३	५.३६	६.३९	६.०५	६.०२	५.४२	६.१४	५.५४	६.४९	५.५३
	१५	५.४९	४.४३	६.४४	५.२७	६.४६	६.००	६.०७	५.३९	६.२०	५.५०	७.००	५.४४
दिसंबर	१	६.००	४.५१	६.५६	५.२४	६.५६	६.००	६.१३	५.४१	६.२६	५.५१	७.११	५.४२
	१५	६.०९	४.५४	७.०६	५.२६	७.०४	६.०४	६.२२	५.४६	६.३४	५.५६	७.२१	५.४३

नक्षत्र से राशि और नामाक्षर का ज्ञान

जिस दिन बालक का जन्म हो, उस समय का नक्षत्र पंचांग में देखें, फिर नक्षत्र के अनुसार नाम का अक्षर और राशि नीचे लिखी तालिका से जानें—

अक्षर	नक्षत्र	राशि	अक्षर	नक्षत्र	राशि
चू चे चो ला	अश्विनी	मेष	पे पो, रा री	चित्रा	कन्या-२, तुला-२
ली लू ले लो	भरणी	मेष	रू रे रो ता	स्वाति	तुला
आ, ई उ ए	कृतिका	मेष-१, वृष-३	ती तू ते, तो	विशाखा	तुला-३, वृश्चिक-१
ओ वा वी वू	रोहिणी	वृष	ना नी नू ने	अनुराधा	वृश्चिक
वे वो, क की	मृगशिरा	वृष-२, मिथुन-२	नो या यी यु	ज्येष्ठा	वृश्चिक
कु घ ङ छ	आर्द्रा	मिथुन	ये यो भा भी	मूल	धन
के को ह, ही	पुनर्वसु	मिथुन-३, कर्क-१	भू धा फा ढा	पूर्वाषाढ़ा	धन
हु हे हो डा	पुष्य	कर्क	भे, भो जा जी	उत्तराषाढ़ा	धन-१, मकर-३
डी डू ड डो	आश्लेषा	कर्क	खा खू खे खो	श्रवण	मकर
मा मी मू मे	मघा	सिंह	गा गी, गू गे	धनिष्ठा	मकर-२, कुम्भ-२
मो टा टी टू	पूर्वाफाल्गुनी	सिंह	गो सा सि सू	शतभिषा	कुम्भ
टे, टो प पी	उत्तराफाल्गुनी	सिंह-१, कन्या-३	से सो द, दि	पूर्वाभाद्रपद	कुम्भ-३, मीन-१
पू ष णा ठ	हस्त	कन्या	दू थ झ ञ	उत्तराभाद्रपद	मीन
			दे दो च ची	रेवती	मीन

राशि स्वामी—मेष और वृश्चिक का मंगल, वृषभ और तुला का शुक्र, मिथुन और कन्या का बुध, कर्क का चन्द्र, सिंह का सूर्य, धन और मीन का गुरु, मकर और कुंभ का स्वामी शनि होता है।

गुरु-दर्शन के लिए नक्षत्र

रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, श्रवण, अनुराधा तथा शुभ वार।

घात-चक्रम्

घात तिथि घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जये प्राज्ञैरन्य कर्मसुशोभनम्॥

राशि–	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास–	कार्तिक	मिगसर	आषाढ़	पोष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि–	१-६-११	५-१०-१५	१-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार–	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगल वार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र–	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात प्रहर–	१	४	३	१	१	१	१	१	१	४	३	४
पु. घात चंद्र	मेष	कन्या	कुंभ	सिंह	मकर	मिथुन	धन	वृषभ	मीन	सिंह	धन	कुंभ
स्त्री घात चंद्र	मेष	धन	धन	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धन	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुंभ

आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा घोषित आगामी चातुर्मास एवं मर्यादा महोत्सव

चातुर्मास (वर्ष)	स्थान	मर्यादा महोत्सव (वर्ष)	स्थान
सन् 2016	गुवाहाटी (असम)	सन् 2016	किशनगंज (बिहार)
सन् 2017	कोलकाता (बंगाल)	सन् 2017	सिलीगुड़ी (बंगाल)
सन् 2018	चेन्नई (तमिलनाडु)		
सन् 2019	बैंगलुरु (कर्नाटक)		
सन् 2020	हैदराबाद (तेलंगाना)		

यात्रा में चंद्र विचार	
	मेषे च सिंहे धन पूर्व भागे, वृषे च कन्या मकरे च याम्ये।
	युग्मे तुले कुंभस्तु पश्चिमायां, कर्कालि मीने दिशिचोत्तरस्याम्।।
अर्थ—	मेष, सिंह, धन पूर्व। वृष कन्या, मकर दक्षिण।
	मिथुन, तुला, कुंभ पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन, उत्तर।
फलम्—	सन्मुखे अर्थलाभाय, दक्षिणे सुखसंपदा।
	पृष्ठे तु प्राणनाशाय, वामे चंद्रे धनक्षयः।।
अर्थ—	सन्मुख का चन्द्रमा, धनदाता दाहिना सुखदाता।
	पीठ का प्राण-हर्ता और बायां धन-हर्ता।

यात्रा में योगिनी विचार		
ईशान ३०/८	पूर्व १/९	अग्नि ३/११
उत्तर २/१०	योगिनी सुखदा वामे। पृष्ठे वांछित दायिनी।। दक्षिणे धनहंत्री च। सन्मुखे मरणप्रदा।।	दक्षिण ५/१३
वायव्य ७/१५	पश्चिम ६/१४	नैऋत्य ४/१२

दिशाशूल-विचार-चक्रम्		
	पूर्व चन्द्र, शनि	
उत्तर मंगल, बुध	दिशाशूल ले जावो वामे। राहू योगिनी पूठ।। सन्मुख लेवै चन्द्रमा। लावे लक्ष्मी लूट।।	दक्षिण गुरु
	रवि, शुक्र पश्चिम	

काल-राहू-विचार-चक्रम्		
ईशान	पूर्व शनि	अग्नि शुक्र
उत्तर रवि	अर्कोत्तरो वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैऋते च याम्ये गुरौ वह्निदिशा च शुक्रे मंदे च पूर्वे प्रवदंति काल।	दक्षिण गुरु
वायव्य सोम	पश्चिम मंगल	नैऋत्य बुध

अभिजित मुहूर्त—दिनमान का आधा करने से जो समय प्राप्त हो उस समय से २४ मिनट पहले और २४ मिनट बाद तक अभिजित मुहूर्त रहता है, जो नगर प्रवेश आदि में श्रेष्ठ माना जाता है। इस मुहूर्त का बुधवार के दिन निषेध है।

सुयोग-कुयोग चक्र

योग	तिथि या नक्षत्र	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि	तिथि			३,८,१३ (जया)	२,७,१२ (भद्रा)	५,१०,१५ (पूर्णा)	१,६,११ (नंदा)	४,९,१४ (रिक्ता)
	—नक्षत्र	मूल	श्रवण	उ. भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू. फा.	स्वाति
अमृतसिद्धि	—नक्षत्र	हस्त	मृगशिरा	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थसिद्धि	—नक्षत्र	मू. ह. पुष्य अश्वि. रे. उत्तरा-३	अनु. श्र.रो. कृ. पुष्य	उ.भा.अश्वि. कृ. आश्ले.	ह. कृ.रो. मृ. अनु.	पुन.पुष्य.रे. अनु. अश्वि.	अश्वि.रे. श्र. पुन. अनु.	रो. स्वा. श्र.
आनन्द	—नक्षत्र	अश्वि.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उ. षा.	श.
मृत्यु	तिथि—	१,६,११	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	४,९,१४	२,७,१२	५,१०,१५
	—नक्षत्र	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त.
कालयोग	—नक्षत्र	भ.	आर्द्रा	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पू. भा.

विशेष सुयोग (१) २,३,७,१२,१५ तिथि, रविवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार तथा भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पू. षा, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, उ.भा. नक्षत्र—इनमें तीनों का सुयोग मिलने पर राजयोग बनता है, जो विशेष सिद्धि-दायक है।

(२) १,५,६,१०,११ तिथि, सोम, मंगल, बुध, शुक्रवार तथा अश्वि., रो., पुन., मघा, ह., चि., मू., श्र., पू. भ. नक्षत्र—इनमें तीनों का संयोग मिलने पर कुमार योग बनता है, जो शुभ है।

विशेष कुयोग—यदि एकम तिथि को मूल नक्षत्र हो, पंचमी को भरणी हो, अष्टमी को कृतिका हो, नवमी को रोहिणी हो, दशमी को आश्लेषा हो तो ज्वालामुखी योग बनता है, जो सब कार्यों में वर्जित है।

ज्ञातव्य— (क) सुयोग और कुयोग दोनों होने पर कुयोग का फल नहीं रहता।

(ख) अभिजित नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण तथा श्रवण का प्रथम पन्द्रहवां भाग अभिजित नक्षत्र होता है।

पौरसी प्रमाण

दिनांक	पग	आंगुल	घंटा	मिनट
२१ अप्रैल	२	८	३	१२
२२ मई	२	४	३	२२
२२ जून	२	०	३	२७
२४ जुलाई	२	४	३	२२
२४ अगस्त	२	८	३	१२
२३ सितम्बर	३	०	३	०
२३ अक्टूबर	३	४	२	४८
२१ नवम्बर	३	८	२	३८
२२ दिसम्बर	४	०	२	३४
२० जनवरी	३	८	२	३८
२१ फरवरी	३	४	२	४८
२० मार्च	३	०	३	०

राहू-काल

वार	समय	राहू-काल बेला
रवि	सायं	४-३० से ६-००
सोम	प्रातः	७-३० से ९-००
मंगल	मध्याह्न	३-०० से ४-३०
बुध	मध्याह्न	१२-०० से १-३०
गुरु	मध्याह्न	१-३० से ३-००
शुक्र	प्रातः	१०-३० से १२-००
शनि	प्रातः	९-०० से १०-३०

टिप्पण :—राहू-काल (समय) में यात्रा करना वर्जित है।

दिन के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात्रि के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

With Best Compliments from

कट्टरता सर्वत्र बुरी नहीं होती।
वह बहुत अच्छी व आवश्यक भी होती है।
व्रत पालन आदि के संदर्भ में
तो कट्टरता अमृत है।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

श्रीमती सायर-हीरालाल मालू

सुजानगढ़-बैंगलोर

With Best Compliments from

निरन्तर जागरूक रहने वाला व्यक्ति
जीवन का सही उपयोग करता है।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

देवराज मूलचंद नाहर

जाणुन्दा-बैंगलोर

With Best Compliments from

जिसे तुम अपना मित्र बनाते हो,
उसके साथ सच्चा हार्दिक संबंध कायम करो।
परस्पर एक-दूसरे का हित करने का संकल्प करो।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

Rameshchand, Vijaraj, Rakesh Bohra

Musaliya-Chennai-Dubai

Pradeep Stainless India Pvt. Ltd.

C 3, Phase II, 3rd Main Road, MEPZ SEZ, Tambaram
Chennai- 600 044, Mob. : 09840177330

With Best Compliments from

अप्रमाद एक परम तत्त्व है।
वह आध्यात्मिक और व्यावहारिक
दोनों दृष्टियों से लाभदायी है।
गलत कार्यों से बचना व जागरूक रहना अप्रमाद है।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

स्व नेमीचंद जी एवं धर्मपत्नी 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'
फूलदेवी लूनिया की पुण्य स्मृति में

मंगलचंद मनोज कुमार लूनिया

चाड़वास - शिलाँग

आचार्य महाश्रमण

जन्म :	वि.सं. 2019, वैशाख शुक्ला नवमी (13 मई 1962) सरदारशहर
पिता :	स्व. श्री झूमरमलजी दूगड़
माता :	स्व. श्रीमती नेमादेवी दूगड़
दीक्षा :	वि.सं. 2031 वैशाख शुक्ला चतुर्दशी (5 मई 1974) सरदारशहर
अन्तरंग सहयोगी :	वि.सं. 2042, माघ शुक्ला सप्तमी (16 फरवरी 1986) उदयपुर
साझपति :	वि.सं. 2043, वैशाख शुक्ला चतुर्थी (13 मई 1986) ब्यावर
महाश्रमण पद :	वि.सं. 2046, भाद्रव शुक्ला नवमी (9 सितम्बर 1989) लाडनूं
युवाचार्य पद :	वि.सं. 2054, भाद्रव शुक्ला द्वादशी (14 सितम्बर 1997) गंगाशहर
आचार्य पदाभिषेक :	वि.सं. 2067, द्वितीय वैशाख शुक्ला दशमी (23 मई 2010) सरदारशहर
महातपस्वी :	वि.सं. 2064, भाद्रपद शुक्ला पंचमी (17 सितम्बर 2007) उदयपुर
शान्तिदूत :	वि.सं. 2068, ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी (29 मई 2011) उदयपुर
श्रमण संस्कृति उद्गाता :	वि.सं. 2069, आश्विन कृष्णा चतुर्दशी (14 अक्टूबर 2012) जसोल
प्रकाशित पुस्तकें :	आओ हम जीना सीखें, दुःख मुक्ति का मार्ग, क्या कहता है जैन वाङ्मय, संवाद भगवान से (भाग-1,2), शिक्षा सुधा, शेमुषी, मेरे गीत, धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, महात्मा महाप्रज्ञ, सुखी बनो, संपन्न बनो, विजयी बनो, रोज की एक सलाह, शिलान्यास धर्म का, अदृश्य हो गया महासूर्य, निर्वाण का मार्ग।

आचार्यश्री महाश्रमण की प्रमुख कृतियां

दुःख मुक्ति का मार्ग

आचार्यश्री महाश्रमण ने इस पुस्तक में साधना के रहस्यों को प्रस्तुत किया है। सुख, शांति और आनंद की प्राप्ति में यह कृति मार्गदर्शक की भूमिका अदा करती है।

क्या कहता है जैन वाङ्मय

इस पुस्तक में जैन शास्त्रों में उपलब्ध सफलता के सूत्रों में से चुनिंदा मोतियों को पिरोया गया है। प्रस्तुत कृति आचार्यश्री महाश्रमण के हृदयस्पर्शी प्रवचनों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है।

आओ हम जीना सीखें

जीता हर कोई है, किन्तु कलापूर्ण जीना कोई-कोई जानता है। प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यश्री महाश्रमण ने कलात्मक जीवन के सूत्रों को प्रकाशित करते हुए जीवन की प्रत्येक क्रिया का व्यवस्थित प्रशिक्षण दिया है। वस्तुतः यह कृति 'कैसे जीएं' इस प्रश्न का सटीक समाधान है।

संवाद भगवान से

प्रतिष्ठित जैनागम उत्तराध्ययन के २९वें अध्ययन पर आधारित इस पुस्तक में भगवान महावीर और उनके प्रमुख शिष्य गौतम के रोचक संवाद के माध्यम से मन में संशय पैदा करने वाले प्रश्नों को विस्तृत रूप में समाहित किया गया है। यह कृति दो भागों में उपलब्ध है।

महात्मा महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ तेरापंथ के आचार्य, अनुशास्ता, साहित्यकार और प्रवचनकार थे। इन सबसे पहले वे एक सन्त थे, महात्मा थे, उनकी आत्मा में महानता थी। उनके उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाश्रमण ने उन्हें नजदीकी से देखा और जाना। प्रस्तुत पुस्तक में श्री महाप्रज्ञ के नौ दशकों के इतिहास और रहस्यों को उजागर किया गया है।

रोज की एक सलाह

लघु आकार में प्रस्तुत यह पुस्तक 'गागर में सागर' उक्ति को चरितार्थ करती है। आचार्य महाश्रमण द्वारा सूक्तियों में दी गई 'रोज की एक सलाह' हर व्यक्ति के लिए प्रतिदिन की पर्याप्त खुराक है। सदा साथ रखी जा सकने वाली यह कृति न केवल सफलता की प्राप्ति में सहायक है, अपितु व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान में भी इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है।

१. सुखी बनो २. सम्पन्न बनो ३. विजयी बनो

आचार्य महाश्रमण ने प्रस्तुत तीनों पुस्तकों में श्रीमद्भगवद्गीता और उत्तराध्ययन की तुलनात्मक विवेचना करते हुए साधक का सुन्दर पथदर्शन किया है। तीन भागों में उपलब्ध यह ग्रन्थमाला जहां दो महनीय ग्रन्थों को युगीन रूप में प्रस्तुति देती है, वहीं अध्यात्मरसिकों के लिए पोषक का कार्य भी करती है।

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं

आचार्यश्री महाश्रमण की प्रस्तुत पुस्तक में जैन तत्त्वज्ञान, साधना के प्रयोगों, महापुरुषों और उनके अवदानों आदि विविध विषयों से संबद्ध उपयोगी और प्रेरणास्पद सामग्री संजोई गई है।

शिलान्यास धर्म का

धर्म का आदि बिन्दु है–सम्यक्त्व। आचार्य महाश्रमण की प्रस्तुत कृति सम्यक्त्व, उसके लक्षण, दूषण, भूषण तथा देव, गुरु, धर्म आदि विषयों पर आधारित प्रवचनों और प्रश्नोत्तरों का संग्रह है। जैन अनुयायियों की आस्था के दृढ़ीकरण में यह कृति सहायक की भूमिका अदा करती है।

निर्वाण का मार्ग

अध्यात्म साधना का अन्तिम लक्ष्य है–निर्वाण। भगवान् महावीर और गौतम बुद्ध ने वर्षों तक साधना कर निर्वाण के रहस्यों को प्राप्त किया और जनता को दिखाया–निर्वाण का मार्ग। जैनागम उत्तराध्ययन और बौद्धग्रंथ धम्मपद पर आधारित आचार्यश्री महाश्रमण की प्रलम्ब प्रवचनमाला के चुनिंदा मोतियों से निर्मित इस पुस्तक को पढ़कर अध्यात्मरसिक व्यक्ति परम सुख का पथ प्राप्त कर सकता है।

• प्राप्ति स्थान •

जैन विश्व भारती, लाडनूं–8742004849, आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल–9928393902, ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

समण संस्कृति संकाय

तेरापंथ के नवम अधिष्ठाता गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के क्रांत मस्तिष्क से प्रस्फुटित लोककल्याणकारी अवदानों में सामाजिक, आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है–**'जैन विद्या का प्रसार'**। 'संस्कारों की प्रयोगशाला : समण संस्कृति संकाय'–जो भावी पीढ़ी में सद्-संस्कारों का वपन करने एवं उनके उन्नत व सुदृढ़ भविष्य का निर्माण करने के लिए जैन विद्या पाठ्यक्रम की लम्बी शृंखला के माध्यम से सन् 1977 से इस दिशा में प्रयासरत है। इस प्रयोगशाला के प्रयोगों को विश्वव्यापी बनाने की दिशा में वर्तमान में यह विभाग आचार्यश्री महाश्रमणजी के मार्गदर्शन में सतत् विकासशील है।

जैन विद्या अध्ययन का उद्देश्य

1. जैन विद्या अध्ययन के माध्यम से सभी आयु वर्ग के भाई बहनों को जैन धर्म के सिद्धांत, तत्त्व विद्या, दर्शन, मान्यताओं, परम्पराओं, आदर्शों से रूबरु करवाना। जैन विद्वान तैयार करना।

2. भौतिक संसाधनों की चकाचौंध व पाश्चात्य संस्कृति से लिप्त नई पीढ़ी को जैन संस्कृति से परिचित कराना व सद्संस्कारों का संरक्षण।

3. मानव जीवन के नियमों व प्रक्रियाओं का अध्ययन कराना जिससे जीवन में नैतिक मूल्यों का विकास हो, बौद्धिक विकास हो।

समण संस्कृति संकाय सम, शम और श्रम की संस्कृति के प्रचार का तंत्र है। उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जैन विद्या के आयाम को विश्वव्यापी बनाने के लिए प्रतिवर्ष लगभग 300 केन्द्रों से हजारों प्रतिभागी संस्कार निर्माण की दिशा में अग्रसर होते हैं। परीक्षाओं के माध्यम से तैयार हुए प्रशिक्षक भी इसमें अपने समय व श्रम का नियोजन करते हैं। संकाय का पूरा तंत्र विशेष जागरूकता के साथ परीक्षाओं का संचालन करता है।

पाठ्य सामग्री

संकाय द्वारा सुगम व सारगर्भित जैन विद्या 9 वर्षीय पाठ्यक्रम संचालित होता है। जिसके निर्माण में मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' का श्रम नियोजित हुआ है। आधुनिक पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्यक्रम के नवीनीकरण कार्य में मुनिश्री जयंतकुमारजी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। वर्तमान में जैन विद्या भाग 1 से 9 तक का पाठ्यक्रम इस प्रकार है–

जैन विद्या प्रथम वर्ष (भाग-1)	- जैन विद्या भाग-1
जैन विद्या द्वितीय वर्ष (भाग-2)	- जैन विद्या भाग-2
जैन विद्या तृतीय वर्ष (भाग-3)	- जैन विद्या भाग-3
जैन विद्या चतुर्थ वर्ष (भाग-4)	- जैन विद्या भाग-4 सचित्र श्रावक प्रतिक्रमण
जैन विद्या पंचम वर्ष हेतु प्रवेश परीक्षा	- जैन विद्या भाग-1 से 4
जैन विद्या पंचम वर्ष (भाग-5)	- जैन तत्त्व विद्या खण्ड-1 जैन परम्परा का इतिहास
जैन विद्या षष्ठम वर्ष (भाग-6)	जैन तत्त्व विद्या खण्ड-2, 3 जैन धर्म : जीवन और जगत
जैन विद्या सप्तम वर्ष (भाग-7)	- भिक्षु विचार दर्शन जीव - अजीव
जैन विद्या अष्टम वर्ष (भाग-8)	- श्रमण महावीर आत्मा का दर्शन (हिन्दी अनुवाद) आचार्य भिक्षु
जैन विद्या नवम वर्ष (भाग-9)	- जैन दर्शन मनन और मीमांसा (खण्ड-3 एवं 4)

जैन विद्या परीक्षाएं

समण संस्कृति संकाय–जैन विश्व भारती द्वारा संचालित जैन विद्या परीक्षाएं पूरे भारत व नेपाल में 10 व 11 अक्टूबर 2015 को आयोजित की गयी। इस वर्ष 302 केन्द्रों से इन परीक्षाओं के लिए 13690 फॉर्म भरे गये थे जिसमें लगभग 8935 परीक्षार्थी परीक्षा में बैठे। परीक्षा परिणाम तैयार हो रहा है, जो फरवरी 2016 में घोषित किया जायेगा।

जैन विद्या अध्ययन

परीक्षाओं संबंधी स्थानीय व्यवस्थाओं हेतु केन्द्र व्यवस्थापकों की नियुक्ति की जाती है। अध्ययन-अध्यापन में स्थानीय संस्थाओं का सहयोग प्राप्त होता रहा है। संकाय द्वारा भारत के 17 प्रांतों व नेपाल में स्थापित 271 केन्द्रों पर परीक्षाओं का परीवीक्षण (Invigilate) किया जाता है। विगत सात वर्षों से अंचल स्तर पर आंचलिक संयोजकों का मनोनयन किया गया है। जैन विद्या परीक्षाओं के विकास, संवर्द्धन व प्रत्येक अंचल में केन्द्रों के विस्तार एवं ज्यादा से ज्यादा परीक्षार्थी जोड़ने हेतु इस वर्ष प्रभारी/आंचलिक संयोजकों की संख्या में वृद्धि की गयी है।

दीक्षांत समारोह का आयोजन

संकाय का सबसे महत्त्वपूर्ण समारोह है–जैन विद्या दीक्षांत समारोह। परीक्षाओं में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले ज्ञानार्थियों को स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्रदान कर सम्मानित किया जाता है। जैन विद्या भाग 1-9 की सम्पूर्ण परीक्षाएं उत्तीर्ण कर लेने पर विद्यार्थी को **'विज्ञ उपाधि'** से नवाजा जाता है। संकाय का 17वां दीक्षांत समारोह दिनांक 26 जुलाई 2015 को विराटनगर (नेपाल) में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया।

जैन विद्या दिवस

इस वर्ष प्रथम बार समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भरती द्वारा एक ही दिनांक 2 अगस्त 2015 को पूरे भारत व नेपाल में **''जैन विद्या दिवस''** के रूप में मनाया गया। इस दिन एकरूपता की दृष्टि से 271 केन्द्रों पर एक ही साइज के बेनर लगाये गये व एक ही समय सब केन्द्रों पर विराजित चारित्रात्माओं के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन करके प्रमाणपत्र वितरण किये गये। इस दिन जैन विद्या प्रचार-प्रसार का विशेष कार्य हुआ।

जैन विद्या सप्ताह

इस बार प्रथम बार दिनांक 3 से 9 अगस्त 2015 तक पूरे भारत व नेपाल में **''जैन विद्या सप्ताह''** के रूप में मनाया गया है। इस सप्ताह में परीक्षा के फार्म भरने की दृष्टि से विशेष प्रयास किया गया। सप्ताह के प्रत्येक दिन का अलग-अलग कार्यक्रम रखा गया। इस सप्ताह का परिणाम यह रहा कि गत वर्षों की तुलना में इस वर्ष अधिक संख्या में फार्म भरे गये और परीक्षा में भी ज्यादा संभागी बैठे।

इस प्रकार समण संस्कृति संकाय द्वारा जैन विद्या के प्रचार-प्रसार हेतु विविध उपक्रम चलाए जा रहे हैं। सभी संघीय संस्थाओं एवं कार्यकर्ताओं से सादर निवेदन है कि अपने क्षेत्र के अधिकाधिक भाई-बहनों को इस उपक्रम एवं जैन विद्या परीक्षाओं से जोड़ने का सलक्ष्य प्रयास करें।

मालचन्द बेगानी
विभागाध्यक्ष, समण संस्कृति संकाय
Mob.09810031623

निलेश कुमार बैद
निदेशक, समण संस्कृति संकाय
Mob.09840053956

समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भारती
लाडनूं-341306 (राजस्थान)
फोन नं. : 01581-226025, 226974 फैक्स : 1581-227280
E-mail : sssankay@gmail.com

आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र के लिए 'प्रेक्षा कार्ड योजना'

प्रेक्षा सिल्वर कार्ड (सहयोग राशि रु. 25 हजार):

कार्ड धारक को प्रदत्त सुविधाएं -

- आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र में प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविरों में प्रतिवर्ष एक साप्ताहिक शिविर में कार्ड धारक को 20 वर्ष तक निःशुल्क सहभागिता।
- आवास सुविधा (अटैच्ड) उपलब्ध कराई जायेगी।
- सात्विक एवं शुद्ध शाकाहारी भोजन उपलब्ध कराया जायेगा।
- स्वयं के न आने पर यह सुविधा कार्ड धारक अपने किसी परिजन अथवा मित्रजन को हस्तान्तरित कर सकेगा।
- प्रेक्षा फाउण्डेशन, जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका प्रेक्षाध्यान की दसवर्षीय निःशुल्क सदस्यता।

प्रेक्षा गोल्डन कार्ड (सहयोग राशि रु. 50 हजार):

कार्ड धारक को प्रदत्त सुविधाएं -

- आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र में प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविरों में प्रतिवर्ष एक साप्ताहिक शिविर में कार्ड धारक को 20 वर्ष तक निःशुल्क सहभागिता।
- वातानुकूलित आवास सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी।
- सात्विक एवं शुद्ध शाकाहारी भोजन उपलब्ध कराया जायेगा।
- स्वयं के न आने पर यह सुविधा कार्ड धारक अपने किसी परिजन अथवा मित्रजन को हस्तान्तरित कर सकेगा।
- प्रेक्षा फाउण्डेशन, जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका प्रेक्षाध्यान की दस वर्षीय निःशुल्क सदस्यता।

प्रेक्षा प्लेटिनम कार्ड (सहयोग राशि रु. 1 लाख):

कार्ड धारक को प्रदत्त सुविधाएं -

- आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र में प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविरों में प्रतिवर्ष एक साप्ताहिक शिविर में कार्ड धारक एवं उसके साथ एक अन्य व्यक्ति को 20 वर्ष तक निःशुल्क सहभागिता प्रदान की जायेगी।
- स्वतंत्र वातानुकूलित आवास सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी।
- सात्विक एवं शुद्ध शाकाहारी भोजन उपलब्ध कराया जायेगा।
- स्वयं के न आने पर यह सुविधा कार्ड धारक अपने किसी परिजन अथवा मित्रजन को हस्तान्तरित कर सकेगा।

- प्रेक्षा फाउण्डेशन, जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका प्रेक्षाध्यान की दस वर्षीय निःशुल्क सदस्यता।

प्रेक्षा एमरल्ड् कार्ड (सहयोग राशि रू. 5 लाख):

कार्ड धारक को प्रदत्त सुविधाएं -

- आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र में प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविरों में प्रतिवर्ष एक साप्ताहिक शिविर में कार्ड धारक एवं उसके साथ एक अन्य व्यक्ति को 20 वर्ष तक निःशुल्क सहभागिता प्रदान की जायेगी।
- वातानुकूलित सुइट (Suite) आवास सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी।
- कार्ड धारक एवं एक अन्य व्यक्ति को प्रेक्षाध्यान शिविर में भाग लेने हेतु आने पर जयपुर एयरपोर्ट से लाडनूं लाने व जयपुर पुनः छोड़ने की वातानुकूलित कार सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।
- सात्विक एवं शुद्ध शाकाहारी भोजन उपलब्ध कराया जायेगा।
- स्वयं के न आने पर यह सुविधा कार्ड धारक अपने किसी परिजन अथवा मित्रजन को हस्तान्तरित कर सकेगा।
- प्रेक्षा फाउण्डेशन, जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका प्रेक्षाध्यान की दस वर्षीय निःशुल्क सदस्यता।

नोट :

- प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा निर्धारित आचार संहिता कार्ड धारक / शिविरार्थियों के लिए अनिवार्य रूप से पालनीय होगी।
- पुरुष एवं महिला शिविरार्थियों के लिए पृथक-पृथक आवास सुविधा उपलब्ध रहेगी।
- शिविर में सहभागिता हेतु दो माह पूर्व प्रेक्षा फाउण्डेशन को लिखित सूचना प्रेषित करनी होगी।
- शिविरार्थियों की निर्धारित संख्या एवं स्थान की उपलब्धता के अनुसार शिविर हेतु प्राथमिकता के आधार पर सहभागिता की स्वीकृति प्रदान की जायेगी।
- यह कार्ड / सदस्यता अहस्तान्तरणीय होगी।

आईये! प्रेक्षा कार्ड योजना के अधिक से अधिक सदस्य बनकर प्रेक्षाध्यान शिविर में सहभागिता कर अपने जीवन में आनन्द एवं शांति का अनुभव करें।

धरमचंद लुंकड़, अध्यक्ष (9840166698)

रमेशचंद बोहरा, चेयरमैन, प्रेक्षा फाउण्डेशन (09840344333)

प्यारेलाल पितलिया, मुख्य न्यासी (9841036262)

अरविन्द गोठी, मंत्री (9810114949)

जीवन विज्ञान

आचार्य महाप्रज्ञ प्रणीत 'जीवन विज्ञान' जीवन जीने की कला सिखाता है। स्वस्थ समाज रचना के लिए स्वस्थ एवं संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण की अपेक्षा है। व्यक्तित्व की समग्रता केवल बौद्धिक विकास में नहीं है, जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सर्वाधिक बल इसी पर दिया जा रहा है, समग्र विकास के लिए शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास भी आवश्यक है। जीवन विज्ञान बौद्धिक ज्ञान की उपेक्षा नहीं करता परन्तु इसके साथ व्यक्तित्व विकास के अन्य आयामों पर भी पर्याप्त बल देने की बात करता है। यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पूरक के रूप में जुड़कर व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः शिक्षा की सम्पूर्णता के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा में जीवन विज्ञान का समावेश हो।

जीवन विज्ञान के उद्देश्य

1. जीवन के परिष्कार द्वारा आध्यात्मिक और वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण करना।

2. जीवन विज्ञान, योग द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकास पर भावात्मक प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन करना।

3. जीवन के उन नियमों एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन एवं अन्वेषण करना, जिससे जीवन के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष का परिष्कार होता है।

4. स्वस्थ समाज की रचना के लिए ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों हेतु स्वस्थ जीवन की प्रायोगिक एवं अभ्यासात्मक प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत कर सके। साथ ही इसके माध्यम से वह समग्र एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में सहभागी बन सके।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षा के इस क्रांतिकारी आयाम को राष्ट्रव्यापी बनाने के लिए जीवन विज्ञान अकादमी प्रारम्भ से जैन विश्व भारती के अंतर्गत कार्यरत है। इस अकादमी के प्रयासों से देशभर में अनेक अकादमियां स्थापित हो चुकी हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में जीवन विज्ञान का विकास और प्रचार-प्रसार कर रही हैं।

जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम

जीवन विज्ञान के अंतर्गत व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य के समुचित विकास हेतु आधुनिक और प्राचीन विद्याओं के समावेश से परिपूर्ण अन्तर्विषयानुबंधी पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया है। विद्यालयीन स्तर पर जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम का प्रारूप निम्नानुसार है—

1. प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान।
2. प्रत्येक कालांश में विषय शिक्षण से पूर्व लघु प्रवृत्तियां।
3. मुख्यधारा के विषय के रूप में (प्रारम्भ से कक्षा 12 तक)।
4. पाठ्यक्रम सहगामी प्रवृत्तियां।

पाठ्य सामग्री

जीवन विज्ञान : एक परिचय, जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज की संरचना,

जीवन विज्ञान : शिक्षा का नया आयाम, शिक्षा जगत् के लिए जरूरी है नया चिन्तन, जीवन विज्ञान : शिक्षक प्रशिक्षक मार्गदर्शिका, जीवन विज्ञान : शिक्षक निर्देशिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान लघु पुस्तिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का केलेण्डर, जीवन विज्ञान : संस्कारमाला (नर्सरी से कक्षा 2 तक), बालक का व्यक्तित्व विकास और मूल्यपरक शिक्षा के प्रयोग, जीवन विज्ञान की रूपरेखा, जीवन विज्ञान पाठ्य-पुस्तकें : कक्षा 3 से 12 तक, सहशैक्षिक प्रवृत्तियों के लिए जीवन विज्ञान प्रश्न मंच एवं केरियर क्लब, संवादों में जीवन विज्ञान, जीवन विज्ञान प्रायोगिकी आदि। (पाठ्य-पुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी सहित गुजराती, कन्नड़, आदि कुछ प्रादेशिक भाषाओं में भी उपलब्ध है।)

जीवन विज्ञान से लाभ

1. बौद्धिक और भावनात्मक विकास का संतुलन।
2. आवेग और आवेश का संयम।
3. आत्मानुशासन की क्षमता का विकास।
4. जीवन व्यवहार निश्छल एवं मैत्रीपूर्ण।
5. मादक वस्तुओं से सेवन से मुक्ति।
6. स्वस्थ जीवन जीने का मार्ग।
7. नैतिक मूल्यों का विकास।
8. पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ अच्छे ढंग से जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण।
9. जीवन की समस्याओं के समाधान की खोज।
10. स्व-शक्ति से परिचय एवं उसके उपयोग की दक्षता।

देश-विदेश में कार्यरत जीवन विज्ञान अकादमी

(दुबई) अजमन, (दिल्ली) महरौली नई दिल्ली, (राजस्थान) अजमेर, जयपुर, भीलवाड़ा, सरदारशहर, नोखा, चूरू, सुजानगढ़, जसोल, बांसवाड़ा, आमेट (महाराष्ट्र) मुंबई, नवी मुंबई, जलगांव, (पं. बंगाल) कोलकाता, (कर्नाटक) बैंगलोर, (तमिलनाडु) पल्लावरम-चेन्नई, ईरोड़, मदुरई, तिरूवन्नामलाई, (हरियाणा) गुड़गांव, भिवानी, (छत्तीसगढ़) दुर्ग-भिलाई, (मध्यप्रदेश) इन्दौर, रतलाम, (उड़ीसा) टिटिलागढ़ (गुजरात) कोबा-गांधीनगर (आन्ध्र-प्रदेश) कुकटपल्ली-हैदराबाद (बिहार) करसर, आरा।

वार्षिक आयोजन

1. जीवन विज्ञान दिवस (12 नवम्बर 2016) कार्तिक शुक्ला 13
2. संस्कार निर्माण प्रतियोगिता 2016
3. जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर
4. जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर
5. जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें

जीवन विज्ञान अकादमी
जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226974, 09414919371
ई-मेल : jeevanvigyanacademy@gmail.com

तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्ट संस्थाएं

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
महासभा भवन
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कोलकाता - 700001 (पश्चिम बंगाल)
फोन : 033-22357956, 22343598
E-mail : info@jstmahasabha.org

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्
प्रशासकीय कार्यालय
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन - 011-23210593
E-mail : abtyp1964@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
'रोहिणी' जैन विश्व भारती परिसर
पो. लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226070

जैन विश्व भारती
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला : नागौर (राजस्थान)
01581-226080,226025,224671
E-mail jainvishvabharati@yahoo.com
Website : www.jvbharati.org

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर (राजस्थान)
01581-226230,226110
E-mail : office@jvbi.ac.in
Website : http:/www.jvbi.ac.in

जय तुलसी फाउण्डेशन
एक्सलैण्ड प्लेस, तीसरा तल्ला
कोलकाता - 17
फोन - 033-22902277,22903377
E-mail : jtfcal@gmail.com

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-23233345, 23239963
E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन. 011-23236738, 23222965

अणुव्रत विश्व भारती
विश्व शांति निलयम्
पो. - राजसमंद - 313326 (राजस्थान)
फोन : 02952-220516, 220628
E-mail : rajsamand@anuvibha.in

राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद
चपलोत गली
राजसमंद - 313326 (राजस्थान)
फोन : 02952-202010, 223100
E-mail : rass_rajsamand@rediffmail.com

आदर्श साहित्य संघ
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-23234641, 23238480
E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

पारमार्थिक शिक्षण संस्था
'अमृतायन' भवन
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226032, 224305

अमृत वाणी
हिन्द पेपर हाउस
951, छोटा छिपावाड़ा
चावड़ी बाजार
दिल्ली - 110006
फोन : 011-23264782, 23263906
E-mail : hindpaper@yahoo.com

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान
'शक्तिपीठ' नोखा रोड
पो. - गंगाशहर - 334401
जिला - बीकानेर (राजस्थान)
फोन : 0151-2270396
E-mail : gurudevtulsi@gmail.com

प्रेक्षा विश्व भारती
गांधीनगर हाइवे
कोबा पाटिया
गांधीनगर - 382009 (गुजरात)
फोन. 079-23276271, 23276606
E-mail : prekshabharati@yahoo.com

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 08094368313,08107451951
E-email : tpfoffice@tpf.org
website : www.tpf.org.in

शिविर कार्यालय
आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल
सम्पर्क सूत्र :
हेमन्त बैद : 9672996960,7044448888
E-mail : campoffice13@gmail.com

सुधी पाठकों हेतु जैन विश्व भारती की विशिष्ट योजना

साहित्य आपके द्वार

साहित्य समाज का दर्पण होता है। जिस देश और समाज का साहित्य जितना विशद् और व्यापक होता है, वह देश और समाज उतना ही तेजस्वी और प्रकाशमान होता है। साहित्य अतीत और अनागत को जोड़कर नये–नये उन्मेष देता है। अतीत, वर्तमान और भविष्य की स्थिति और परिस्थिति को प्रतिबिम्बित कर जीवन्त समस्याओं को समाहित करने वाला सत् साहित्य समाज व राष्ट्र की प्रगति का आधार प्रस्तुत करता है।

जैन विश्व भारती द्वारा शिक्षा, शोध, सेवा, साधना, साहित्य, संस्कृति एवं समन्वय संबंधी सप्तसकार रूपी गतिविधियों में **साहित्य प्रकाशन एवं वितरण** एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन विद्या, जीवन विज्ञान से संबंधित साहित्य के साथ धर्मसंघ के आचार्यों, चारित्रात्माओं, समण–समणीवृंद तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित / संपादित साहित्य का प्रकाशन संस्था द्वारा विगत लगभग चार दशकों से किया जा रहा है। विभिन्न लेखकों द्वारा रचित अनेक शीर्षकों से संबंधित पुस्तकें संस्था द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित की जाती है।

सुधि पाठकों की मांग के आधार पर जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित नवीन साहित्य पाठकों को घर बैठे उपलब्ध करवाने की दृष्टि से 'साहित्य आपके द्वार' योजना प्रारम्भ की जा रही है, ताकि अधिकाधिक लोग घर बैठे ही सत्साहित्य से लाभान्वित हो सकें। योजना का प्रारूप निम्न प्रकार है–

1 कोई भी व्यक्ति उक्त योजना के अन्तर्गत रु. 5,000 / – की राशि प्रदान कर निर्धारित आवेदन पत्र भरकर इस योजना का लाभ प्राप्त कर सकता है।

2 जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित समग्र साहित्य 50 प्रतिशत की विशेष छूट पर उपलब्ध करवाया जाएगा।

3 प्रत्येक पुस्तक भेजने का कोरियर / डाक खर्च आवेदक द्वारा वहन किया जाएगा एवं यह राशि योजना की उक्त सहयोग राशि में से कम की जाती रहेगी।

4 इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक आवेदक का एक अलग विवरण जैन विश्व भारती के साहित्य / लेखा विभाग में रखा जाएगा, जिसमें योजना की

सहयोग राशि रु. 5,000/– तक का साहित्य आवेदक को उसके द्वारा निर्देशित पते पर प्रेषित किया जाता रहेगा। इस सहयोग राशि में प्रत्येक पुस्तक का अर्द्धमूल्य तथा कोरियर/डाक खर्च मिलाकर कम किया जाता रहेगा।

5 जब आवेदक के खाते में रु. 500/– से कम की राशि जमा रहेगी तब उसे एक आवेदन पत्र पुनः प्रेषित किया जाएगा, जिसे भरकर रु. 5,000/– की राशि साथ में जमा करवाकर इस योजना को निरन्तर जारी रखा जा सकेगा।

6 दिनांक 01 जनवरी से 31 दिसम्बर के मध्य किसी भी तिथि को आवेदन प्रस्तुत करने वाले आवेदक को उस वर्ष की दिनांक 01 जनवरी से जो भी पुस्तकें जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित होगी, वे सभी प्रेषित की जायेंगी। उसके पश्चात् नवीन प्रकाशित पुस्तकें योजना राशि की समाप्ति तक आवेदक को स्वतः ही प्रेषित की जाती रहेगी।

7 सहयोग राशि पूर्ण हो जाने पर योजना के अन्तर्गत प्रेषित संपूर्ण पुस्तकों एवं कोरियर व डाक खर्च का पूरा हिसाब विवरण सहित आवेदक को भेज दिया जाएगा।

योजना में सहभागिता हेतु संपर्क करें

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं- 341306, जिला : नागौर (राजस्थान) फोन नं. : (01581) 226080, 224671, ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

त्वरित संपर्क : श्री जगदीश कुमी (08742004849), श्री मंदराम सिमार (09928393902)

नववर्ष पर परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा प्रदत्त मंत्र

चइत्ता भारहंवासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
संती संतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं।।

आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त पावन प्रेरणानुसार उक्त मंत्र का यथासंभव प्रतिदिन सूर्योदय के आसपास 21 बार अवश्य जप करें।

With Best Compliments from

भलाई का काम करो, भगवान की सच्ची भक्ति हो जाएगी।
तुम्हें अच्छी शक्ति मिल जाएगी।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

पूज्य पिताजी स्व. भोमराज जी बैताला
माताजी स्व. भंवरी देवी बैताला की पुण्यस्मृति में
टीकमचंद, महावीरचंद, हंसराज, राजेश,
अभय, अनिल बैताला

(छोटी खाटू-भागलपुर-दिल्ली-जोधपुर-जयपुर)

E-mail : hansrajbetala@rediffmail.com

JAIPUR

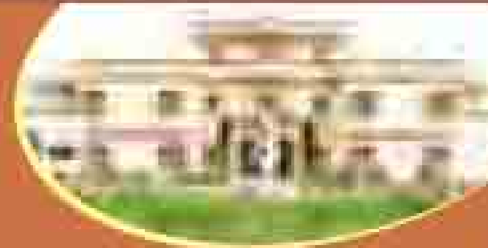

'A' Grade by NAAC and 'A' Category by MHRD

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

(मान्य विश्वविद्यालय)

नियमित पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम : एम.ए. : ▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ दर्शन ▸ संस्कृत ▸ प्राकृत ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ क्लीनिकल साइकोलॉजी ▸ अहिंसा एवं शान्ति ▸ राजनीति विज्ञान ▸ समाज कार्य ▸ अंग्रेजी ▸ एम.एड. (उपरोक्त सभी विषयों में पी-एच.डी. की सुविधा) एम.फिल.: ▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ अहिंसा एवं शांति ▸ प्राकृत एवं जैन आगम, स्नातक पाठ्यक्रम : ▸ बी.ए. ▸ बी.कॉम. ▸ बी.लिब ▸ बी.एड.(केवल महिलाओं के लिए), विविध पाठ्यक्रम : ▸ प्रमाण पत्र एवं डिप्लोमा

पत्राचार पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम : ▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ शिक्षा ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ अंग्रेजी ▸ अहिंसा एवं शांति

स्नातक पाठ्यक्रम : बी.ए. ▸ बी.कॉम. ▸ बी.लिब., प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम, बी.पी.पी. पाठ्यक्रम : ▸ वे आवेदक जो 10+2 उत्तीर्ण नहीं हैं अथवा प्राथमिक औपचारिक योग्यता नहीं रखते हैं, लेकिन 18 वर्ष की उम्र पूर्ण कर चुके हों, विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पाठ्यक्रम बी.पी.पी. परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं।

फोन : 01581-224332, मो. 9462658701, 9462658501, Web : www.jvbi.ac.in, e-mail : jvbiladnun@gmail.com

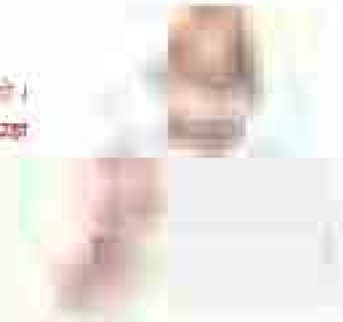

।। अर्हम् ।।

शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व के लिए आवश्यक है, व्यक्ति की सोच सकारात्मक हो।

– आचार्य महाप्रज्ञ

अहिंसापूर्ण जीवन शैली का महत्वपूर्ण आधार है – मैत्री।

– आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

श्रीचंद, उम्मेद, विजयसिंह, अजय, अभिषेक, आतिष, तनिश, आरव एवं विराज मोहोनोत
(डीडवाना निवासी, बैंगलुरु प्रवासी)

Manufacturers & Exporters of
Plastic Tagging Pins, Loop Pins, Tagging Guns, Trimmers &
Texitile Spot Cleaning Guns under popular brands of :

ARROW® | Wonder® | TagStar® | UNIVERSAL® | CHOKHO®

No. 5 Charles Campbell Road, Cox Town, Bengaluru - 560005, Karnataka, India.
Tel. 0091 (0) 80- 25483928/25483508; Fax. 0091 (0)80-25488780/25484364;
E-mail : enquiry@jaygroups. com; Website - www.jaygroups.com